भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 15 **मई-जून** 2014 **(वैशाख शुक्ल पक्ष -शुक्ल पक्ष, संवत् 2071)** **अंक** 5-6

कन्नड़ के विख्यात उपन्यास-लेखक शिवराम कारंत जिस हाईस्कूल में पढ़ते थे, उसके मुख्याध्यापक ने नियम बना रखा था कि बड़ी क्लासों के विद्यार्थी सदा अंग्रेजी में ही बातचीत किया करें। मुख्याध्यापकजी जिसे भी कन्नड़ में बातें करते देख लेते, उसे सजा भुगतनी पड़ती थी। कारंतजी इसका इलाज करना चाहते थे।

एक दिन जब मुख्याध्यापकजी कहीं पास ही थे, उन्होंने अपने एक साथ से कोई मजाकिया बात कही और जब वह हँसने लगा, तो बनावटी गुस्से में जोर से बोले—''फ़ूल! ह्वाइ डू यू लाफ़ इन कन्नड़? यू आर ए हाईस्कूल स्टूडेंट। लाफ़ इन इंग्लिश।'' तीर ठीक निशाने पर लगा। मुख्याध्यापक ने फिर कभी किसी को कन्नड़ में बात करने पर दण्ड नहीं दिया।

■ ■ ■

जेन-गुरु र्‌योकन पर्वत की तलहटी में एक पर्णकुटी में सादगी से जिन्दगी गुजारते थे। एक साँझ उनकी अनुपस्थिति में एक चोर कुटिया में घुस आया, मगर वहाँ कुछ न पाकर खाली हाथ लौट चला। तभी र्‌योकन उसके सामने पड़ गये। वे सारी बात समझ गये। बोले—''भैया, तुम इतनी दूर से मुझसे मिलने आये, सो मैं तुम्हें खाली हाथ कैसे जाने दूँ? लो, मेरा यह चोगा लेते जाओ।'' और अपना चोगा उतारकर उसे दे दिया। चकित चोर चुपचाप चोगा लेकर वहाँ से खिसक गया। तब तक चाँद निकल आया था। नग्नदेह गुरु र्‌योकन एक चट्टान पर बैठकर मुग्ध-भाव से चाँदनी की छटा देखते रहे। उनकी काया ठण्ड से काँप रही थी, परन्तु उनकी आत्मा सौन्दर्य-सिन्धु में स्नान कर रही थी। उनके मुँह से निकला—''अभागा आदमी! काश, मैं उसे यह खूबसूरत चाँद उपहार में दे सकता!''

''शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूँसे बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है, जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।''

—डॉ० एस० राधाकृष्णन्

'मनेर-मानुष' की तलाश

मनेर-मानुष / मन का मनुष्य—अर्थात् हमारे मन में स्थित आत्म-सत्ता जो हमारी चेतना के जागरण, स्वप्न, सुषुप्ति में भी सतत जाग्रत ऊर्जा-केन्द्र है जिसकी खोज में भटकता रहता है अपना इक-तारा बजाता हुआ 'बाऊल'। यह व्याकुल-बावरा दीन-दुनिया से बेखबर घर-बार छोड़कर निकल पड़ता है। उसे न तन की सुध है न लोक-लाज की परवाह। 'मनरे-मानुष' की खोज में बेसुध गाते-बजाते भटकता रहता है गाँव-गाँव, नगर-नगर, गली-गली। उसके विरह-कातर करुण-स्वर से खिंचते चले आते हैं कुछ भोले-भाले लोग और वह बावला मगन-मन नाचने-गाने लगता है। उसके स्वर-संगान में डुबकी लगाते लोग खोजने लगते हैं अपने-अपने मन का मनुष्य—मनेर-मानुष!

विराट्-सांस्कृतिक प्रवाह के भारतीय भूगोल की भाषाएँ और बोलियाँ और हर-जगह अनुप्रवाहित अंतर-संस्कृतियाँ अपने सर्वांगीण समन्वयन में इसी 'मनेर-मानुष' या आत्म-पुरुष की खोज में अग्रसर हैं। यह खोज ज्ञान के मार्ग से है या भक्ति के मार्ग से है यह अलग चीज़ है, मगर खोज तो खोज है अहैतुक, रागमयी-अनुरागमयी।

प्रागैतिहासिक काल से आज तक हज़ारों पीढ़ियों की सुदीर्घ-यात्रा में मनुष्य ने विकास के अनगिनत आयाम पार किये हैं फिर भी वह मुकम्मल न हुआ। आदिम जांगलिक-जीवन के प्राकृतिक-संघर्षों, कुल-कबीलों की लड़ाईयों, जातीय-युद्धों में मरते-खपते हुए भी वह आगे बढ़ता रहा और अंततः उसने स्थायित्व स्वीकार किया। ग्रामीण और नागरिक समाज की संरचना एवं सभ्यता तथा संस्कृति के क्रम में मनुष्य की देह-रचना, उसकी ऐन्द्रिक-अनुभूतियाँ, उसके मनो-मस्तिष्क की संवेग-परक या वैचारिक-अवधारणाओं का भी साथ-साथ विकास होता रहा है। श्रुति-स्मृति-प्रज्ञा की बौद्धिक शक्ति ने ज्ञान-विज्ञान के असंख्य क्षितिज खोल दिये किन्तु मनुष्य अपनी पाशविक-वृत्तियों का शमन नहीं कर सका उसके नख-दंत धारदार और धारदार बनते चले गये।

इस यात्रा के आरम्भ में ही मनुष्य के आन्तरिक-भय ने किसी पराशक्ति या ईश्वर की रचना कर ली थी जिसके प्रति वह मौन भाव से अपनी आस्था व्यक्त करता अपनी लब्धियाँ उसे अर्पित करता और फिर आगे बढ़ चलता। इसी मूल आस्था ने वैश्वक-स्तर पर फैली मानव-जातियों में विभिन्न धर्मों के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की। प्रत्येक धर्म ने आचरण के बाह्य-आभ्यंतर अनुशासन में मानवीय वृत्तियों को संस्कार दिये। हर समाज ने सदाचरण और दुराचरण का नैतिक-नियमन किया, सद्-असत् का विवेक दिया। ईश्वरीय-गौरव के समक्ष आतंकित, नतमस्तक होकर धार्मिक-परिधियों के बीच बमुश्किल सीमाबद्ध किया जा सका मनुष्य-मन का आदिम-पशु।

शेष पृष्ठ 2 पर

धार्मिक-आस्था के साथ दार्शनिक-विचारों के उद्‌भव, साहित्य-संगीत-कला-संस्कृति के समग्र विकास के साथ प्राकृतिक साहचर्य ने मानवीय भावनाओं, विचारों के लिए अभिव्यक्ति का उन्मुक्त आकाश प्रस्तुत कर दिया। इसी आकाश की छाँव में जारी रही मनुष्य की प्रगति-यात्रा। इस यात्रा-क्रम में भी उपलब्ध सम्पत्ति और समृद्धि ने लगातार भोग-लिप्सा को बढ़ावा दिया जिसकी बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए पुन: सक्रिय हो गयीं आदिम-वृत्तियाँ।

20वीं सदी के भौतिक-ज्ञान, विज्ञान के विकास ने एक ओर सम्भावनाओं के नये आकाश खोज लिये। पृथ्वी की सीमा का अतिक्रमण करते हुए अलग-अलग ग्रहों-उपग्रहों की ओर अभियान किया, ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों का सन्धान करते हुए नये-नये आविष्कार किये वहीं दूसरी ओर टूटने लगीं मानवीय मर्यादाएँ, विखण्डित हो चले मानव-मूल्य, ध्वस्त हो गये सारे प्रतिमान। इस नूतन कलेवर में आदिम-पशु के पुनरोदय ने बदल दिये सत्ता और पूँजी के सामाजिक-समीकरण परिणामत: 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में ही लड़े गये दो-दो महायुद्ध और दुनिया को बाँट कर थोप दिया गया एक अदृश्य साम्राज्य तंत्र जिसकी गिरफ्त में साँस लेने को मजबूर हैं शेष दुनिया के गरीब विकासशील देश।

इन्हीं के बीच हम भी हैं। विज्ञापनों की प्रतिस्पर्धा के साथ हमारे इर्द-गिर्द भोग-उपभोग का इन्द्रजाल फैल चुका है। उपभोग्य-वस्तु को हासिल करने के लिए हमारे जन-गण भी माँजने लगे हैं अपने नख-दंत।

कैसी विडम्बना है कि विपणन के इस बाज़ार में भी 'मनेर-मानुष' की तलाश कर रहा बावरा कवि-मन—

मन: सिंधु के अतल-तल में
या मनोव्योम के दूर दिगंत में
बुड़े कहाँ तुम, उड़े कहाँ तुम
कहाँ खो गये बंधु-सखा?
. . . . . .

सर्वेक्षण

● **लोकमत की मौन-अभिव्यक्ति :** इस वर्ष अप्रैल '2014 में भारतीय गणतंत्र की 15वीं लोकसभा का कार्यकाल पूर्ण होने पर चुनाव-आयोग की देखरेख में 16वीं लोकसभा हेतु राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव आयोजित हुए। यह चुनाव मूलत: सत्ता पक्ष (कांग्रेस) और प्रमुख विपक्षी दल (भाजपा) के बीच लड़ा गया यद्यपि क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय पार्टियों के भी अपने-अपने दावे थे। कांग्रेस-नीत गठबंधन और कथित क्षेत्रीय-राष्ट्रीय पार्टियों ने भाजपा-नीत गठबंधन के प्रचार-प्रमुख को लक्ष्य करते हुए पूरे चुनाव को व्यक्ति-केन्द्रित कर दिया। इन सबने मिल-जुल कर एक ही व्यक्ति के विरुद्ध खूब विष-वमन किया एवं अपनी-अपनी 'सेकुलरिटी' के पाखण्ड का ढोल पीटते हुए साम्प्रदायिकता की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करते रहे। लन्दन और अमेरिका के प्रमुख पत्र 'दी इकोनॉमिस्ट' और 'गार्जियन', 'न्यूयार्क टाइम्स' आदि ने भी व्यक्ति-विशेष को लक्ष्य करते हुए अपने मंतव्य दिये। किन्तु लक्षित व्यक्ति और पार्टी ने धैर्य नहीं खोया। शान्तिपूर्ण माहौल में निश्चित तिथियों पर चुनाव सम्पन्न हुए। लोकतंत्र के लोक ने मौनभाव से अपना अभिमत दिया। यथासमय मतगणना आरम्भ हुई और धनात्मक-बहुमत के साथ भाजपा ने अपनी बढ़त दर्ज करना शुरू किया अब सत्ता के केन्द्र में था लक्षित नकारात्मक-व्यक्ति—नरेन्द्र दामोदरदास मोदी। अप्रत्याशित रूप से कांग्रेस-नीत गठबंधन विपक्ष का नेतृत्व करने लायक स्थिति में भी नहीं रह गया, दूसरे सेकुलर दल भी सिमट गये। पिछली सरकार के अनिर्णय से हुए राजकोषीय-घाटे, महँगाई, भ्रष्टाचार एवं अन्य विपरीत स्थितियों के बीच अब लोकमत की मौन-अभिव्यक्ति की कसौटी पर हैं वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा बहुप्रचारित 'अच्छे दिन'!

● **ज़ेहादी-आतंक के साये में :** प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर आज समूची दुनिया ज़ेहादी-आतंक के साये में साँस ले रही है। प्रत्यक्षत: पिछले तीन दशकों से अपने पड़ोस द्वारा प्रवर्तित आतंक का सामना हम करते आ रहे हैं। अब हमारा पड़ोसी मुल्क भी अपने ही भस्मासुरों से आतंकित है। दूसरी ओर इराक और अफगानिस्तान में अमेरिकी हस्तक्षेप के बाद से ज़ेहादी-आतंक का विस्तार मध्य-एशिया से लेकर यूरोप-अमेरिका-अफ्रीका आदि मुल्कों तक होता चला जा रहा है। नये-नये नामों से कारगुज़ारियाँ कर रहे हैं अलक़ायदा, लश्करे-तैयबा, तालिबान जैसे बीसीयों संगठन। हर देश इनसे परेशान है किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जगत में सत्ता और पूँजी का पता नहीं कैसा यह खूनी खेल है कि सभी देशों की गुप्तचर एजेंसियाँ और विशाल चतुरंगिणी सेना के बावजूद आतंक कायम है। वे चाहें तो बाजी समेट लें, बन्द कर दें पैसा-रसद और हथियारों की सप्लाई लाईन। लेकिन पता नहीं क्यों वे ऐसा नहीं करना चाहते और खेल रहे हैं खूनी-खेल।

कर्बला में भी नहीं मिलेगी पनाह तुमको
बेमौत मारे जाओगे महफूज़ बंकरों में।

—परागकुमार मोदी

भृगु-दर्दरी-संवाद

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

महर्षि भृगु अपने ददरी-क्षेत्र (बलिया) वाले आश्रम में विद्यमान थे। यद्यपि यह आश्रम उन्होंने अपने तेजस्वी शिष्य महर्षि दर्दरी के लिए छोड़ दिया था और अब नर्मदा के मुहाने पर भृगुकच्छ (भड़ौच) पर रहने लगे थे। फिर भी प्रिय शिष्य का प्रेम उन्हें कभी-कभी पुरानी तपोभूमि की ओर खींच ही लाता था। अन्य ऋषियों-महर्षियों के पास तो जन-सैलाब उमड़ता था अपनी दुख-विपत्ति का निदान पाने के लिए। दृष्टिहीन दृष्टि माँगता, बाँझ औरतें सन्तान माँगतीं, दरिद्र धन माँगता और ज्ञानीजन मुक्ति का मार्ग।

परन्तु महर्षि भृगु की फजीहत का कारण बनी हुई थी उनकी अपनी ही लिखी भृगुसंहिता जिसमें उन्होंने एक तो क्या, तीन-तीन जन्मों का हाल एक ही साथ लिख दिया था। संहिता बता देती थी कि पिछले जन्म में तुम कहाँ थे, क्या थे, कैसे थे? और अब अगले जन्म में तुम्हें क्या होना है? संहिता का ऐसा जोरदार असर हुआ कि वह हजारों, लाखों, पण्डितों के उदर-भरण का साधन बन गई। पण्डितों ने, भृगु से भी दो हाथ आगे बढ़ कर 'जजमान' और उसकी 'फँसी गोटी' देख कर फलादेश में नमक-मिर्च लगाना शुरू कर दिया। भृगुसंहिता के नाम पर सब जायज़ था।

आज भी महर्षि भृगु के आश्रम में बेहया, बकलोल, लतखोर, बतछुट, लुच्चे, लफंगे, कंगालबाँकों की भारी भीड़ इकट्ठा थी। ये सभी चुनावी महाभारत-संग्राम के बलि के बकरे थे। जैसे उस महायुद्ध में पाण्डवपक्ष के केवल सात (पञ्च पाण्डव, सात्यकि, कृतवर्मा) तथा कौरवपक्ष के मात्र दो (अश्वत्थामा, कृपाचार्य) वीर बचे थे वैसे ही इस महासमर में भी बचेंगे उतने ही जितनी लोकसभा में सीटें हैं। परन्तु हजारों और जो 'फरी' मार रहे हैं, 'झाँसी' खेल रहे है, 'मकना' कर नाक से 'फुर्र-फुर्र' करते 'पदरौंक' रहे हैं, इनकी तो अकालमृत्यु ही होनी है।

हमारे गाँव में तो एक परम 'जरतुहा' इण्टर कॉलेज के रिटायर्ड प्राचार्य हैं। एक तो रिटायरमेण्ट से उपजी घर में पड़े रहने की ऊब, ऊपर से अपनी पेंशन का शत्रुसरीखे कुटुम्बियों की स्वार्थसिद्धि में उपयोग। और तिस पर भी असह्य महादारुण दुःख—इस उम्र में 'बूढ़ा' का महाविछोह। समस्या की इस त्रिपुटी में जकड़े प्राचार्य जी सीधे कालकूट उगलते हैं। एक दिन चल पड़ी नये चुनाव की चर्चा तो बोले—अरे भाई! काहे हलाकान होते हो? मरने दो हरामजादों को अटक कर। जो लूट-लूट कर सालों से तिजोरी भरी है वही तिजोरी बहन जी के, नेता जी के, बाबू साहब के चरनों पर अर्पित करके ही तो टिकट पा रहे हैं? पाप का धन पुण्य में थोड़े न जायेगा? अब रही बात वोट देने की तो आत्मा जिस सर्वाधिक कम बेईमान, उदार धूर्त, नरमदिल कमीने की ओर प्रेरित करे, उसे दे देना। कौन इनमें गांधी, राजगोपालाचारी, नेहरू, सुभाष, सरदार पटेल और मौलाना अबुल कलाम है कि पाप हो जायेगा?

अब देखो न इस मुछन्दर तथाकथित सन्त को! क्या नाम है उसका? हाँ हरताल महराज! शुरू से ही इसका एक पैर राजनीति में और दूसरा (अ) धर्मनीति में रहा। अभी कल तक पक्का कांग्रेसी था। कांग्रेस का गुन गाता था और बी.जे.पी. को गालियाँ देता था। कांग्रेस की कृपा से रेलवे का राज्यमंत्री तक रहा। और अब देखो कि जा घुसा बी.जे.पी. में! उसके लाखों-करोड़ों भक्तजन अपने गुरु की यह दुश्चरित्रता, यह बहुरुपियापन और यह भड़ैती क्यों नहीं देखते? कल तक वह अपने लाखों भक्तों को कांग्रेस का पिछलग्गू बनाये था। और अब? अब उन्हीं को बी.जे.पी. का पिछलग्गू और समर्थक बनायेगा? यदि उसके लाखों भक्त, जो कल तक कांग्रेस का गुन गाते थे, अबकी बार गुरु के प्रेम में अन्धे होकर बी.जे.पी. को वोट देते हैं— तो क्या आप उन्हें विवेक-सम्पन्न मनुष्य कहेंगे? इसका अर्थ यही हुआ कि वे निरे 'मिट्टी के माधो' हैं। उनके भीतर भी वही आत्मा है, वही विवेक है जो मुछन्दर हरताल में है। जो गुरु उन्हें पृथ्वी लोक पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये उल्टी-पल्टी यात्राएँ करा रहा है, वह उन धर्मान्धों को मृत्यु के बाद स्वर्ग ले जायेगा या रौरव? यमराज उसे अपने दल में लाना चाहेंगे और विष्णु अपने दल में। जहाँ उसे फायदा दीखेगा, बड़ी पद-प्रतिष्ठा दीखेगी—वहीं वह जायेगा। परन्तु मैं कहता हूँ वह जाय जहाँ मन हो। बी.जे.पी. में शामिल हो या सपा में या बसपा में। लाखों भक्तों को यदि वह अपने सम्प्रदाय का वास्ता देकर अपनी राह पर ले जाता है तो यह घृणित कार्य है। स्विच ऑन करने से मशीनें चलती हैं, मनुष्य नहीं। मनुष्य अपने विवेक से चलता है।

इस निर्वाचन ने एक बात तो सिद्ध कर दी है कि राजनीति में घुसे छुटभैयों से बड़ा 'लतखोर' भारत में दूसरा कोई वर्ग है ही नहीं। मीडिया **स्टिंग आपरेशन** करता रहे, सम्पादक कॉलम पर **कॉलम** लिखते रहें, जनता थू-थू करती रहे, भाड़े के टट्टू टूटते रहें— उन्हें कोई चिन्ता नहीं। रंग बदलने में उन्होंने गिरगिटों को मीलों पीछे छोड़ दिया है। उनका पार्टी बदलना देख, कोठेवालियों ने भी उनसे अपनी हार मान ली है। भारत की जनता इन राजनेताओं की परम साहसिक, मूल्यहीन नंगीनाच देख चकित है, स्तब्ध है।

आश्चर्य तो इस बात से है कि सारे कुएँ में ही भाँग पड़ी है। जिस पार्टी में अटल, आडवाणी, जोशी, जेटली, सुषमा तथा मोदी जैसे चरित्रवान नेता हों वह भी जगदम्बिका पाल जैसे विभीषण के लिये किले का द्वार खोल दे?

प्राचार्य जी की इस बात का उत्तर पड़ोसी ने दिया—अरे प्रिंसिपल साहब! आप अभी किनारे 'छपकोरी' खेल रहे हैं। थोड़ा गहरे उतरिये नदी में तब थाह मिलेगी। यह खल्वाटचक्रचूड़ामणि की बुद्धि का कमाल है। कैसे करीने से उसने तीते-मिर्चों को मसाले से अलग किया है, यह देखने लायक है। अब जो पकवान बनेगा वह उसके गपकने लायक ही तो होगा। ये हरताल और जगदम्बिका पाल या और भी अपमानित, लांछित, दुत्कृत, परित्यक्त, बहिष्कृत जो 'पाल' लोग बी.जे.पी. में घुसे हैं— यह सब खल्वाट जी की महिमा है। मौके पर यही विभीषण, यही आम्भी, यही मीर जाफर तो काम आयेंगे?

परम चाणक्यबुद्धि से इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नामी-गरामी प्रोफेसर तथा अपने दल के सर्वश्रेष्ठ विद्वान् को काशी से दूर फेंक दिया। पं० केसरीनाथ त्रिपाठी घिघियाते ही रह गये, उन्हें कहीं से टिकट ही नहीं दिया। कलराज मिश्र को नेपाल की तलहटी में सरका दिया। स्वयं को बैठा लिया राजधानी लखनऊ के चौक में, और वह भी लालजी टण्डन जैसे तपे-तपाए नेता को खारिज कर। बुढ़ऊ अडवाणी जी, जो पहले से ही भीष्म की तरह परशुराम और अम्बा का शाप भुगत रहे हैं, को भी सक्रिय राजनीति में बने रहने के लिए सारा पत्रा भुगता दिया। बचा क्या? मोदी के कन्धे पर बन्दूक रख कर पट्ठे ने सारे उत्तरी भारत को निर्द्वन्द्व बना लिया अपने लिए।

अब क्या होगा? मोदी जीतेंगे? अवश्य जीतेंगे, क्यों कि तैंतिसों कोटि देवता, चौसठों योगिनियाँ, उन्चासों मरुद्गण, सत्ताइसों नक्षत्र, बारहों आदित्य, ग्यारहों रुद्र, नवोग्रह, सातों दिन और प्रत्येक होरा उनके अनुकूल है। तीसरा मोर्चा-तीसरा मोर्चा की तीतर रट लगाने वाले सैफई-नायक को भी अब अँधेरा दीखने लगा है। उधर, समय-समय पर बिगड़े ट्यूमर की तरह घटने-बढ़ने वाले चाणक्य के मौसेरे भाई बक्तमुख भी अब मोदी के बहुमत की घोषणा करने लगे हैं। परन्तु मोदी और मोदी के नाम पर बी.जे.पी. का जीतना एक बात है और **मोदी का प्रधानमंत्री** बनना दूसरी बात। गहड़वाल जयचन्द के वंशदीपक को मालूम है कि ढ़ेर सारे महारथी उन्हें नेता चुने जाने का विरोध करेंगे और तब मैं अपने

किसी परमपिट्ठू झीतदास द्वारा अपना नाम उछलवा कर मैदान में आ जाऊँगा। नाम आया नहीं कि गोटी मेरे पक्ष में होगी क्योंकि सारे खरीदे गए मेमने मेरा ही नाम मिमियाएँगे और मैं धीरोदात्त नायक की तरह, अपने ही द्वारा प्रायोजित, अपनी लोकप्रियता का नाटक देखूँगा। मोदी को भी भैया-बाबू कह कर, उप प्रधानमंत्री का सुजानगंजी एट्मबम (जौनपुर के सुजानगंज कस्बे की एक प्रख्यात मिठाई) मुँह में ठूँस कर मना ही लिया जायेगा।

ऊँट किस करवट बैठेगा, यह तो भविष्य बतायेगा। फिलहाल, अपनी करटक-दमनकनीति यही है।

परन्तु भाई लोगों को यह पता नहीं है कि इस देश की जनता लात खा-खा कर अब मजबूत हो गई है। चाहे जितनी चालाकी से शब्दामृत छिड़कते, पैकेज बाँटते और 'माई-बाबू-बचवा' कहते आप इसे सब्जबाग दिखायें वह फँसने वाली नहीं। पञ्चतंत्र के 'चित्रग्रीव' कबूतर की तरह बहेलिये का बिखेरा चावल भी खायेगी और एकजुट होकर उसका जाल भी लेकर उड़ जायेगी। तुम डार-डार हम पात-पात। बिना अमेरिकन शासन-प्रणाली के भारत का कल्याण नहीं है। राजनेता जितनी जल्दी यह व्यवस्था अपना लें। उतना ही अच्छा है—उनके भी पक्ष में और राष्ट्र के पक्ष में। अब खानदानी राजनीति नहीं चलने वाली। यह भी नहीं चलेगा कि पत्नी तो रह जाय कांग्रेस में राजनैतिक लाभों के लिए और पतिदेव जी बी.जे.पी. में घुस जायें। बुआजी बी.जे.पी. से मुख्यमंत्रीजी हों और भतीजेजी कांग्रेस से मंत्री हों।

चार-छ साल के लिये पड़ोसी से मुकदमा चल जाय या किसी रिश्तेदारी में खटास आ जाय तो भी, समझौता हो जाने पर, उसके घर जाना, कितना विचित्र लगता है? नाइन द्वारा ठेल कर पालकी में बैठाई जाती गौनहरी बहू की तरह लोग बड़ी मुश्किल से जा पाते हैं। परन्तु इन कंगालों की हिम्मत तो देखिये कि धड़ल्ले के साथ उस पार्टी में घुसे जा रहे हैं जिसे अभी कल तक पानी पी-पी कर कोस रहे थे? क्या हौसला है? इनकी जीवन-डिक्शनरी में तो जैसे लज्जा, संकोच, मर्यादा, लोकापवाद, जनमत तथा स्वाभिमान सरीखे शब्द ही नहीं हैं। ये अभागे 'रखैलों' का जीवन जी रहे हैं—जो उन्हें पान-फूल दे, उसी के साथ 'राजी-खुशी' से रहने को तैयार हैं। इन्हें यह समझाया ही नहीं जा सकता कि डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी या डॉ० राममनोहर लोहिया कांग्रेस से क्यों अलग हो गये थे? इनकी आचरण संहिता के अनुसार तो वे पूरे 'बुड़बक्क' ही थे कि बिना कुर्सी के सोने जैसी जिन्दगी उन्होंने माटी कर दी। क्या मिला उन्हें?

सबसे भले पासवान जिन्हइ न व्यापत जगतगति। रामविलास पासवान जी इस युग के सफलतम राजनेता हैं जिनके बिना कोई सरकार बनती ही नहीं। वह यश-अपयश, चन्दन-कीचड़, थुक्का-बुक्का, नीति-अनीति सबसे परे हैं। अब, राजनीति के सरोवर में लाभ के सिंघाड़े तोड़ने के लिए **नौसेना का विक्रान्त** तो आयेगा नहीं? सो भैया पासवान जी अपनी चार गगरी के मुँहकड़े बाँध कर बनाई गई अपनी 'घण्डई' लिये चौबीसों घण्टे तैयार खड़े मिलते हैं पावरेच्छुक पार्टी के लिए। और इसका मूल्य भी क्या? ना हीरा, ना सोना-चाँदी! बस एक अदद मंत्रीपद!

(उपरोक्त आलेख 'भारतीय वाङ्मय' को चुनाव परिणामपूर्व 15 अप्रैल को प्राप्त हुआ था किन्तु तब तक 'भारतीय वाङ्मय' का अंक प्रकाशित हो चुका था, उसके बाद अब 'भारतीय वाङ्मय' का यह अंक प्रकाशित हो रहा है। हालांकि यह आलेख चुनाव परिणामपूर्व प्रकाशित होता तो ज्यादा प्रासंगिक होता फिर भी यह चुनावपूर्व राजनीति का अत्यन्त ही रोचक आईना है, जो पाठकों को तल्ख सच्चाईयों से परिचित कराते हुए गुदगुदायेगा भी और विक्षोभ का भी अहसास करायेगा। आलेख में प्रस्तुत विचार लेखक के अपने हैं, किसी और के सहमत होने या न होने से परे।)

बुद्ध और उनकी शिक्षा
(प्रश्नोत्तरी)
हेनरी यस० ऑल्कॉट

अनुवादक :
छत्रधारी सिंह व डॉ० प्रेमनारायण सोमानी

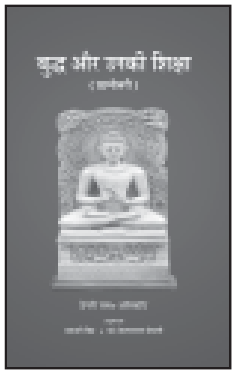

आकार डिमाई

पृष्ठ 96

सजिल्द : 978-81-89498-66-5 • रु० 200.00
अजिल्द : 978-81-89498-67-2 • रु० 100.00

थियोसॉफिकल सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष (स्व०) हेनरी यस० ऑल्कॉट का ध्यान 'भगवान बुद्ध' के विचारों की ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने बुद्ध-धर्म व उनके विचारों में वह सब कुछ पाया, जिसकी आवश्यकता आज के विश्व को थी। धर्म केवल जानने के लिए नहीं, प्रत्युत् धारण करने के लिए होता है। यह जीवन जीने की वास्तविक कला सिखाता है। अर्थ, काम, मोक्ष का प्रदाता है। इसीलिए 1881 में उन्होंने अंग्रेजी में यह पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक प्रश्नोत्तरी के रूप में अपनी विशेषताओं के कारण थोड़े ही समय में इतनी लोकप्रिय हो गयी कि यह अगणित संस्करणों के साथ यूरोप तथा विश्व की अनेक भाषाओं में प्रकाशित होने लगी। कुछ देशों ने तो इसे विद्यालयों की पाठ्य-पुस्तक के रूप में भी स्वीकृत कर दिया। पर हिन्दी में अब तक इसका अनुवाद न होना वस्तुतः एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू था। अतः सबके कल्याण हेतु हिन्दीभाषी लोगों के लिए इसका हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। धर्म की इतनी संक्षिप्त पर पूर्ण, सरल, सटीक, स्पष्ट तथा उपयोगी व्याख्या कदाचित् ही कहीं मिले।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

उनके धर्म या उपदेश

प्रश्न 105 : 'बुद्ध' का अर्थ क्या होता है?
उत्तर : पूर्णज्ञाता जिसकी बोधि पूर्णरूपेण जाग्रत् हो चुकी हो, जिसे सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो।

प्रश्न 106 : क्या इस बुद्ध के पूर्व भी अन्य बुद्ध हो चुके हैं?
उत्तर : हाँ। जैसा सबका विश्वास है; नैसर्गिक व्यवस्था के अन्तर्गत समय.समय पर बुद्ध का जन्म हुआ करता है। जब मानव.जाति अविद्या के कारण दुःखों में डूब जाती है, तो विद्या (प्रकाश) का प्रसार करने कोई न कोई बुद्ध आता ही है।

प्रश्न 107 : कोई बुद्ध कैसे बनता है?
उत्तर : कोई व्यक्ति जब यह सुनता है और जानता है कि पृथ्वी पर पहले कोई बुद्ध हो चुके हैं तो वह भविष्य में वैसा ही बनने की ठानता है, और उपयुक्त समय पाकर मानव को जन्म—मरण के चक्र से बाहर निकालने के लिए बुद्ध बनता है।

प्रश्न 108 : उसकी गति कैसी होती है?
उत्तर : उस जन्म में और बाद के जन्मों में, अनुभवों द्वारा ज्ञान प्राप्त कर तथा उच्चतर सद्गुणों का विकास करके अपने उन्माद और संवेग पर संयम बरतने लगता है। इस प्रकार शनैः.शनैः वह ज्ञानवान, चरित्रवान और गुणवान बनता जाता है और अन्त में अनेक जन्मों के बाद, पूर्ण प्रकाशित, सर्वज्ञ होकर मानव. मात्र का पथ.प्रदर्शक बनता है।

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

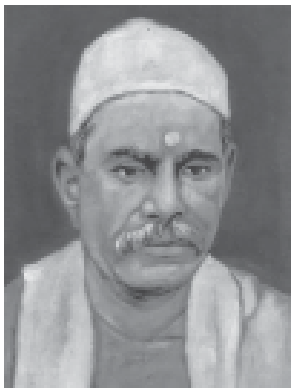

हिन्दी गद्य के कबीर पं० बालकृष्ण भट्ट की जयन्ती

'प्रदीप से परिष्कृत हुई हिन्दी'

इलाहाबाद, अहियापुर (मालवीय नगर) में खेमामाई मन्दिर के समीप 23 जून 1844 को व्यापारी वेणीप्रसाद के घर जन्मे पं० बालकृष्ण भट्ट बचपन से ही जुझारू थे। दसवीं पास कर उन्होंने संस्कृत पढ़ी। कायस्थ पाठशाला में वह संस्कृत के अध्यापक भी रहे। अंग्रेजी, उर्दू पर उनकी गहरी पकड़ थी। सितम्बर 1877 में हिन्दी पत्रिका 'प्रदीप' की शुरुआत की।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार कबीर यदि कविता में भाषा के डिक्टेटर थे तो भारतेन्दुयुगीन प्रतिनिधि निबन्धकार पं० बालकृष्ण भट्ट हिन्दी गद्य के कबीर थे। उनके कबीरत्व का प्रमाण उनकी रचनाओं से मिलता है। भट्टजी की भाषा भी उतनी ही स्वतंत्र और मारक थी। अपनी सपाट बयानी के कारण ही कई बार भट्टजी को अंग्रेजों की नोटिसों का दंश झेलना पड़ा और जुर्माना भी देना पड़ा। सम्पादित पत्र हिन्दी प्रदीप के अंकों में प्रकाशित उनके सम्पादकीय आलेखों को पढ़ने से साफ होता है कि भट्टजी के व्यंग्य देर व दूर तक असर करने वाले थे। छोटे विषयों पर ललित निबन्ध लेखन में सिद्धहस्त भट्टजी ने आँख, नाक, महत्व, सोना, वायु, आशा, आँसू, द, जी, ईमानदारी, हृदय आदि निबन्धों में अंग्रेजी नीतियों को लताड़ा और व्यक्ति के मनोविज्ञान को मार्मिकता से स्पर्श किया।

हिन्दी के योद्धा : भट्टजी के प्रपौत्र पं० चक्रपाणि भट्ट—आज की तरह 19वीं सदी में भी हिन्दी के दुश्मन थे। अन्तर इतना ही था कि यह दुश्मन विदेशी हुआ करते थे। जिस समय भट्टजी ने हिन्दी प्रदीप का प्रकाशन शुरू किया उसी वर्ष भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले अखबारों पर लगाम कसने वाला रेग्युलेटिंग प्रेस कानून पारित हुआ। भट्टजी ने खुलकर अंग्रेजी भाषा का विरोध हिन्दी प्रदीप में हिन्दी निबन्धों के जरिए किया। उनके प्रहसनों 'इंग्लैंडेश्वरी', 'भारत जननी', 'वेणु संहार' सहित 29 नाटकों व प्रहसनों में अंग्रेजी शासकों को हाथ पकड़कर कटघरे में खड़ा किया गया।

जब पत्रिका बन्द करनी पड़ी : हिन्दी प्रदीप में खरी बातें प्रकाशित होती थीं। 1909 अप्रैल के चौथे अंक में माधव शुक्ल की 'बम क्या है' नामक कविता छपी तो अंग्रेज सरकार ने पत्रिका पर तीन हजार रुपये का जुर्माना लगा दिया। उस समय भट्टजी के पास भोजन तक के पैसे नहीं थे, जमानत कहाँ से भरते। विवश होकर पत्रिका बन्द करनी पड़ी। 20 जुलाई 1914 को उनका निधन हो गया।

नये लेखकों का अभ्युदय : भट्टजी की पत्रिका प्रदीप से कई लेखकों का अभ्युदय हुआ। इनमें राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, आगम शरण, पण्डित माधव शुक्ल, मदनमोहन शुक्ल, परसन और श्रीधर पाठक आदि थे। पुरुषोत्तमदास टण्डन की प्रदीप में 12 रचनाएँ छपीं।

साहित्य-सुमन (ललित निबन्ध)

लेखक : **बालकृष्ण भट्ट**

■

भट्ट जी की यादें (पं. बालकृष्ण भट्ट के संस्मरण)

लेखक : **ब्रजमोहन व्यास**

सम्पादन : **लक्ष्मीधर मालवीय**

पृष्ठ 192

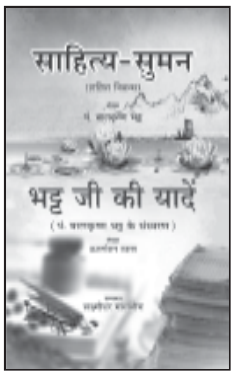

सजिल्द : 978-93-5146-050-3 • रु. 350.00 अजिल्द : 978-93-5146-051-0 • रु. 130.00

इस गुटिका में जो भट्टजी के लेख संग्रहीत हैं वे उनकी उच्च धारणा और अनाक्रम्य सत्य-प्रियता के प्रतिबिम्ब हैं; उनकी सार्वलौकिक हित-निष्ठा के साथ ही उनकी असाधारण प्रतिभा और बुद्धि-प्रखरता के साक्षी हैं। इनका अध्ययन पाठक को असामान्य मनस्विता के असीम साम्राज्य में ले जाकर अपरिमित मनोज्ञता की सैर कराता है। जिस समय के लिखे हुए यह लेख हैं उस समय का चिन्तन करते सहृदय पाठक के हृदय में लेखक की सुरुचि और प्रवणता की ओर प्रेमाप्लुत श्रद्धा उदित होती है, और उनका चटकीलापन चित्त में चिर-स्थिरता प्राप्त करता प्रतीत होता है। शैली का यत्किञ्चित् अनोखापन जो यत्र-तत्र पाया जाता है वह भी उनकी उपादेयता को बढ़ाता ही है और एक विशेष कौतूहल का उत्पादक है।

भट्टजी की हिन्दी में भट्टजी की छाप लगी हुई है। उनकी भाषा उन्हीं की अपनी भाषा है। भट्टजी की भाषा से एक अनोखा रस टपकता है, जो अन्य लेखकों की भाषा में मिलना प्राय: कठिन है। जिस तरह से वे अकारण संस्कृत के शब्दों को अपने लेखों में नहीं ठूँसते थे उसी तरह वे उर्दू फ़ारसी के शब्दों को अपनी भाषा से बीन बीन कर अलग नहीं करते थे। हिन्दी लिखते समय वे संस्कृत की विद्वत्ता का बोझ अपनी लेखनी से दूर रखते थे। जब कभी संस्कृत साहित्य की परख अपने हिन्दी पाठकों को कराने के लिए वे उस पर अपने अनोखे निबन्ध लिखते थे, तो अपनी विद्वत्ता के भार से पढ़ने वालों को दबाते न थे, बल्कि संस्कृत कवियों की कविता और सौन्दर्य को वे अपनी ही स्वाभाविक सरल भाषा में लिखकर पाठकों के सामने रखते थे। भट्टजी जिस विषय पर कोई लेख लिखते थे भाषा भी उसी के अनुसार रहती थी। यदि वे हास्य या ठठोल लिखते थे तो भाषा भी वैसी ही हास्य और ठठोल से भरी रहती थी, यदि किसी पर कटाक्ष करते थे तो भाषा भी व्यंग्यपूर्ण रहती थी, यदि शृङ्गार रस लिखते थे तो भाषा भी रसीली और शृंगारमयी रहती थी और यदि कोई गम्भीर विषय उठाते तो भाषा भी गम्भीर और साहित्य के गुणों से पूर्ण रहती थी।

इस पुस्तक माला में साहित्य और नीति सम्बन्धी सब 25 लेख के गुच्छे चुन-चुन के सजाये गये हैं। इन लेखों को पढ़कर भट्टजी की लेखनी का पूर्ण स्वाद मिल सकता है। भट्टजी के स्वसम्पादित 32 साल के 'हिन्दी प्रदीप' में स्थान-स्थान पर ये लेख जगमगा चुके हैं। पर इनकी तरोताज़गी, चटकीलेपन और रसीलेपन में कहीं से भी बासीपन की गंध नहीं झलकती। भट्टजी के रसीले पाठक जब ही इनका स्वाद चक्खेंगे कहीं से भी सुगन्ध की कमी इनमें न पावेंगे।...

पं० ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखे गए भट्टजी के संस्मरण सरस्वती पत्रिका में जून 1958 से लेकर जून 1959 के अंकों में निकले थे। व्यासजी भट्टजी के जामाता तो बाद में हुए, किशोरावस्था में भट्टजी से उन्होंने संस्कृत पढ़ी थी। अंतरंग परिचय के ये संस्मरण अपने आप में बेजोड़ हैं।

आकार डिमाई *पृष्ठ* 116

सजिल्द : 978-93-5146-041-1 • रु. 220.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

भारतीय संस्कृति के तीन सोपान

प्रो० राजाराम शास्त्री

सम्पादक : **प्रो० सत्यप्रकाश मित्तल**

प्रोफ़ेसर राजाराम शास्त्री का व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। तलस्पर्शी अध्ययन, गहन चिन्तन एवं प्रामाणिक लेखन ने उन्हें महाप्राण में परिणत किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में बाईस लेखों को संगृहीत किया गया है। इनके अन्तर्गत लेखक ने मानव समाज की संरचना एवं विकास की संक्षिप्त किन्तु ऐतिहासिक झलक प्रस्तुत की है। लेखों के शीर्षक विचारोत्तेजक एवं गवेषणात्मक हैं। वे समकालीन समाज के विभिन्न आयामों को समझने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। भाषा, सभ्यता, संस्कृति, जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, जन-व्यवस्था, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद की अवधारणा, अपरिग्रह की भावना, भारतीय संस्कृति एवं परिवर्तन की चुनौतियाँ, स्वार्थ एवं परमार्थ का सामंजस्य आदि ऐसे विचार-बिन्दु हैं जिन्हें अलग-अलग लेखों में उठाया गया है।

व्यक्ति का सामाजीकरण

प्राचीन भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के चार ऋण बताए हैं। ये हैं—मनुष्य-ऋण, देव-ऋण, पितृ-ऋण, ऋषि-ऋण या गुरु-ऋण। इनमें से मनुष्य-ऋण का सर्वसामान्य होने के कारण अन्य तीनों में ही अंतर्भाव हो जाता है। अत: तीन ऋण रह जाते हैं। मनुष्य इन ऋणों को लेकर ही पैदा होता है। इनका प्रतिषोध करना उसके जीवन का प्रयोजन होता है। आजकल की भाषा में—मनुष्य सबसे पहले तो एक प्राणी है, फिर वह एक सामाजिक प्राणी है। निजी प्राणधारणा करने और सामाजिक प्राणधारणा करने के सिलसिले में ही वह माता-पिता, गुरुजन तथा प्रकृति का ऋणी हो जाता है। यह ऋण वह अनिच्छा से नहीं लेता और न उसे चुकाना ही अवांछित होता है। वस्तुत: उसका स्वभाव ही उसे माता-पिता, गुरुजन तथा प्रकृति की सेवा के लिए विवश करता है। संक्षेप में, सामाजिक होना उसके जीवन की आवश्यकता ही नहीं, स्वयं उसका जीवन-दीप है। यह उसके जीवन की मूल प्रवृति है। इसी प्रवृत्ति के अनुसार वह माता-पिता, गुरुजन तथा प्रकृति के प्रति भक्ति तथा अनुराग लेकर पैदा होता है और ये ही इच्छाएँ उसका जीवन बनाती हैं। वस्तुत: माता-पिता, गुरुजन और प्रकृति उससे अलग रहकर उसे ऋण नहीं देते। वे स्वयं उनके अंग बन जाते हैं और वह स्वयं उनका अंग ही है। इनका परस्पर अविच्छेद्य अंगांगी संबंध है।

मनुष्य को जीवन प्राप्त होता है माता-पिता से। जीवन-रक्षा की आर्थिक सामग्री का उपभोग प्राप्त होता है देवताओं (प्रकृति) से और सामाजिक शक्तियों से, जीवन-विकास के उपाय प्राप्त होते हैं समाज के संचित ज्ञान और संस्कार से जो उसे गुरुओं से मिलता है, किंतु वह माता-पिता, गुरु और प्रकृति से लेता ही नहीं है, वह स्वयं माता-पिता, गुरु और प्रकृति है, क्योंकि वह इन्हीं के तत्त्वों से बना है। यही कारण है कि स्वयं माता-पिता, गुरु और प्रकृति बनने की प्रवृत्तियाँ उसकी रचना में ही विद्यमान हैं जिनसे उनके विविध ऋण का मोचन (उऋण) होता है। इन्हें क्रमश: सुतैषणा, लोकैषणा और वित्तैषणा कहते हैं। इन एषणाओं की पूर्ति वह स्वयं संतान को जन्म देकर, शिष्यों को शिक्षा देकर तथा सांस्कृतिक कार्यों द्वारा करता है। सामाजिक उपयोग की सामग्री की उत्पत्ति का साधन बनकर और उस उत्पत्ति की प्राकृतिक शक्तियों के निर्माण तथा उन्नति में सहयोग देकर वह यही करता है। अत: देव-ऋण, पितृ-ऋण और गुरु-ऋण को चुकाने में एषणाएँ क्रमश: जीवन की आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक समस्या का और स्वयं वे त्रिविध ऋण जीवनगत त्रिविध प्रभावों का रूप धारण करते हैं। इस प्रकार ये माता-पिता और संतति, गुरु-शिष्य या नियोजक-नियोज्य के तीन सामाजिक संबंधों को जन्म देते हैं।

बाल्य-काल

बच्चा जब माता के गर्भ में होता है, उसी समय से उसपर उसके माता-पिता की शारीरिक तथा मानसिक स्थिति का प्रभाव होने लगता है। उसकी स्वास्थ्य संबंधी अनेक शारीरिक गुण-अवगुण तथा वंश-परंपरा से प्राप्त प्रवृत्तियाँ उनके रज-वीर्य में निहित होती हैं, जिनसे गर्भ का निर्माण होता है। अत: यह शारीरिक गुण और प्रवृतियाँ बच्चे को जन्मना प्राप्त होती हैं। इसके बाद जब तक बच्चा गर्भ में रहता है तब तक माता की शारीरिक दशा उसे प्रत्यक्षत: प्रभावित करती है। इतना ही नहीं, माता-पिता की मानसिक दशा (ज्ञान, विचार एवं प्रवृत्ति) का प्रभाव भी अप्रत्यक्ष रूप से बच्चे पर पड़ता है।

यों तो, परिवार और समाज की आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति भी गर्भ के प्रति माता-पिता के रूप और व्यवहार में कारण होती है और इस अर्थ में वह भी पहले से ही गर्भस्थ बच्चे के स्वरूप को अंशत: निर्दिष्ट करती है। यह दु:ख स्वयं एक व्यक्ति की ओर से दूसरे व्यक्ति के प्रति होने वाले सामाजिक व्यवहार का बीज है। किन्तु यह प्रभाव बच्चे पर सीधे नहीं पड़ता। वह पहले माता-पिता पर पड़ता है और उनके शरीर द्वारा ही बच्चे पर पड़ता है। किंतु जन्म लेते ही बच्चा इन सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के साक्षात् सम्पर्क में आ जाता है। अब वह माता-पिता के शरीर का अवयव नहीं रह जाता, बल्कि स्वयं एक व्यक्ति होता है। माता-पिता के अतिरिक्त परिवार तथा समाज के व्यक्ति भी धीरे-धीरे बालक के संपर्क में आने लगते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति तथा सांस्कृतिक अवस्था बच्चे पर माँ-बाप के शरीर द्वारा ही नहीं, बल्कि सीधे उसकी उपभोग्य सामग्री के भावाभव तथा अन्य व्यक्तियों के व्यवहार के रूप में प्रभाव डालने लगती है। वह इसके प्रति कुछ प्रतिक्रिया भी करता है। किंतु अभी वह इन प्रतिक्रियाओं या अपनी क्रियाओं के प्रति जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता, क्योंकि मनुष्य के बच्चे की अन्य जीवों के बच्चों से यह विशेषता है कि जहाँ अन्य जीवों के बच्चों में जन्म-काल से ही, या कुछ समय के बाद उनकी जाति के जीवनोपयोगी सारी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ विकसित हो जाती हैं, वहाँ मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ जन्म से बहुत कम विकसित रूप में मिलती हैं। मनुष्य का बच्चा अन्य जीवों की अपेक्षा अत्यधिक भिन्न होता है तथा परिवर्तनशील प्राकृतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल बन सकता है। उसकी शारीरिक तथा सामाजिक प्रवृत्तियाँ जब तक पूर्ण विकसित नहीं हो जातीं तब तक उसके व्यवहार की जिम्मेदारी उस पर न होकर माता-पिता, शिक्षक और समाज पर होती है।

बच्चा और समाजीकरण

समाजीकरण की प्रक्रिया ही बच्चे को अपने समाज की संस्कृति में शिक्षित करती है। यह प्रक्रिया जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

याद किए गए राहुल सांकृत्यायन

वाराणसी। वर्तमान में साहित्यकार व जनता के बीच खाई बढ़ती जा रही है। इससे समाज में भटकाव की स्थिति है। ऐसे में साहित्यकारों को जनता के बीच दूरी खत्म करनी होगी। इसके लिए उन्हें अपने ड्राइंगरूम से बाहर निकलकर लोगों के बीच जाकर लेखन करना होगा।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयन्ती के अवसर पर उदय प्रताप स्वायत्तशासी कॉलेज में विगत दिनों आयोजित 'आन्दोलन की वैचारिकी हमारा समय' विषयक व्याख्यान का यह निष्कर्ष रहा। हिन्दी विभाग व प्रगतिशील लेखक संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी के मुख्य वक्ता महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि साम्प्रदायिकता का उभार लेखकों के लिए शर्म की बात है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रसिद्ध कथाकार डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा कि हमें जनता की भाषा में ही अपनी बात कहने की कोशिश करनी चाहिए। राहुलजी ने अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिए भोजपुरी भाषा का सहारा लिया।

महानायक थे महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

वाराणसी। महापण्डित की 121वीं जयन्ती पर काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग में राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि राहुल की भाषा साहित्य एक मिशनरी भावना से संचालित सांस्कृतिक आन्दोलन था। वह वस्तुत: अपनी सांस्कृतिक विरासत की खोज का आन्दोलन था। इस अवसर पर प्रो० श्रद्धानन्द, डॉ० मुक्ता, डॉ० संगीता श्रीवास्तव सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ० मंजुला चतुर्वेदी ने किया।

अण्डमान में हिन्दी कवि सम्मेलन

हिन्दी साहित्य कला परिषद, पोर्ट ब्लेयर द्वारा दिनांक 26 अप्रैल 2014 को एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज के निदेशक डॉ० आनन्दवर्धन शर्मा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि निरन्तर सक्रियता से ही रचनाधर्मिता में प्रौढ़ता आती है। युवा रचनाकारों को चाहिए कि वे निरन्तर लेखन के द्वारा अपना उत्कृष्ट देने का प्रयास करें। इस अवसर पर उन्होंने स्वरचित कविताओं का पाठ भी किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता बसन्त महिला महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० उषा शर्मा ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि अण्डमान निकोबार द्वीप समूह मुख्यभूमि से दूर होने के बावजूद भावनात्मक स्तर पर काफी निकट है। रचनात्मक धरातल पर भी यह निकटता देखी जा सकती है।

तथ्यपरक इतिहास बोध जगाने हेतु आत्म निरीक्षण

म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी भवन न्यास के संयुक्त तत्वावधान में बारहवीं बसन्त व्याख्यानमाला में 'भारतीय इतिहास दृष्टि' विषय पर बोलते हुए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रमेशचन्द्र लाहोटी, न्यायमूर्ति वीरेन्द्रदत्त ज्ञानी तथा विचारक प्रो० शंकर शरण ने एक स्वर में कहा कि आज हमारे स्कूल-कॉलेजों में जो इतिहास पढ़ाया जा रहा है वह हमारा इतिहास नहीं है। वह तो पश्चिम की इतिहास दृष्टि से भारतीय सामर्थ्य को नकारने वाला इतिहास है, जिसका भारत से सम्बन्धित सही तथ्यों से कोई लेना-देना नहीं है। इन विद्वानों ने कहा कि भारत में न्यायपरक इतिहास बोध जागृत करने के लिए भारतवासियों को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। न्यायमूर्ति लाहोटी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, न्यायमूर्ति ज्ञानी अध्यक्ष एवं प्रो० शंकर शरण व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता थे।

कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ० श्यामसुन्दर निगम एवं वसंत निरगुणे को श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान (2013), श्रीमती सविता वाजपेयी को श्री वीरेन्द्र तिवारी स्मृति रचना पुरस्कार (2014), डॉ० उर्मिला शिरीष को श्री शैलेश मटियानी कथा पुरस्कार (2014), श्री फार्रुख शेरखान को डॉ० सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' नाट्य पुरस्कार (2014) न्यायमूर्ति रमेशचन्द्र लाहोटी द्वारा प्रदान किया गया जिसके अन्तर्गत सम्मान राशि, शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात वरिष्ठ कवि कमलकिशोर दुबे के ग़ज़ल संग्रह 'मुहब्बत का चिराग' और चन्द्रप्रकाश जायसवाल के उपन्यास 'सहस्त्रार्जुन' का मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति रमेशचन्द्र लाहोटी और समारोह के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वीरेन्द्रदत्त ज्ञानी ने लोकार्पण किया।

प्रत्यक्ष प्रजातंत्र की सम्भावनाओं पर खुली बहस

वर्तमान में भारत में संसदीय शासन प्रणाली के अन्तर्गत प्रतिनिधि प्रजातंत्र है। इस व्यवस्था में पाँच साल में एक बार वोट से अपने प्रतिनिधि चुनने के बाद जनता की कोई भूमिका नहीं रहती तथा ऐसी नीतियाँ बनती और ऐसे निर्णय लागू होते रहते हैं, जो आम जनता की अपेक्षाओं एवं भावनाओं के विपरीत होते हैं। इस स्थिति के चलते भारत में जनता की भूमिका शासन के संचालन में सीमित हो गई है और अनेक बुराइयों ने वर्तमान शासन प्रणाली में प्रवेश कर लिया है। प्रतिनिधि प्रजातंत्र में कुछ बुराइयाँ तो पहले से ही थीं, बहुत सारी आजादी के बाद के छह दशक में और जुड़ गई हैं। परिणामत: आज जनता वर्तमान शासन व्यवस्था से कटी-कटी सी है। उसको इस बात का अहसास नहीं है कि देश में सब उसकी इच्छा और राय से चल रहा है। ऐसे हालातों में जनता को शासन व्यवस्था में सीधी भागीदारी देने के लिए पूरक रूप में प्रत्यक्ष प्रजातंत्र के बारे में सोचना जरूरी हो गया है। यह निष्कर्ष उस खुली बहस का है, जो म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्वावधान में वरिष्ठ विमर्श मंच में विगत दिनों हुई। 'भारत में प्रत्यक्ष प्रजातंत्र की आवश्यकता और सम्भावना' विषय पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी केवलकृष्ण सेठी की अध्यक्षता में हिन्दी भवन में हुए इस विचारोत्तेजक विमर्श में समाज के प्राय: सभी वर्गों के प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर वैचारिक पहल में हिस्सा लिया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्य सचिव अशोक विजयवर्गीय और म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक कैलाशचन्द्र पंत विशेष रूप से उपस्थित थे। बहस का संचालन समिति के सहायक मंत्री महेश सक्सेना ने किया।

ग़ज़ल संग्रह का विमोचन

छत्तीसगढ़ प्रगतिशील लेखक संघ भिलाई-दुर्ग के तत्वावधान में प्रतिबद्ध बुजुर्ग शायर डॉ० नसीम नरवीजी का सम्मान एवं उनके गजल संग्रह 'देखो-देखो वो आफ़ताब रहा' का विमोचन कल्याण महाविद्यालय, भिलाई सभागार में सम्पन्न हुआ।

समाज के वंचित समाज का साहित्य सामने आने लगा है

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र के द्वारा आयोजित 'हमारे समय का साहित्य' पर केन्द्रित तीन दिवसीय परिसंवाद और रचना पाठ का आयोजन किया गया।

'हमारा समय और साहित्य' नामक सत्र में उद्‌घाटन व्याख्यान देते हुए हिन्दी के प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह ने कहा कि वर्तमान समय को पूँजीवादी ताकतों और जनविरोधी सरकारी नीतियों ने अत्यन्त जटिल बना दिया है। सत्र का मुख्य वक्तव्य देते हुए विख्यात आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि आज आत्मसंघर्ष की चर्चा तो साहित्य में पर्याप्त हो रही है, किन्तु यह समाज-संघर्ष का विरोधी बन गया है। इस भेद को समाप्त करना ही वर्तमान साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती है। सत्र में वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने 'बनारस' कविता का पाठ किया। कथाकार मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास 'मिलजुल मन' के कुछ अंश सुनाये। हंस के पूर्व कार्यकारी सम्पादक संजीव ने भी रचना पाठ में हिस्सेदारी की।

परिसंवाद के कथा-साहित्य पर केन्द्रित 'हमारा समय और कथा-साहित्य' पर मुख्य व्याख्यान देते हुए प्रख्यात आलोचक रोहिणी अग्रवाल ने कहा कि अस्मितावादी साहित्य ने समाज के बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़ने का कार्य किया है। आज की कहानी ने दलित विमर्श को गम्भीरता से उठाया है।

परिसंवाद के काव्य साहित्य पर केन्द्रित 'हमारा समय और कविता' पर मुख्य व्याख्यान देते हुए वरिष्ठ आलोचक प्रो० रविभूषण ने कहा कि आज का समय वित्तीय पूँजी, लम्पट पूँजी, आवारा पूँजी का है। इस बदले हुए पूँजीवाद ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है और मानवीय जीवन को विकृत बना दिया है। कवि की आँखों के सामने उसकी रचना नष्ट हो रही है। काव्य-पाठ सत्र में अशोक वाजपेयी, मंगलेश डबराल, मकरंद परांजपे, अनामिका, लीलाधर मंडलोई आदि ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

समापन सत्र में जनसत्ता के सम्पादक ओम थानवी ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य और समाज में बढ़ते हुए भेद के लिए हमारे साथ के लोग ही जिम्मेदार हैं।

भाषा—सांस्कृतिक आविष्कार

कोलकाता में 'अपनी भाषा' संस्था ने अपना तेरहवाँ स्थापना दिवस समारोह मनाते हुए भारतीय भाषा परिषद के सभागार में 'हमारी भाषाएँ और भारतीय सभ्यता का भविष्य' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रख्यात गाँधीवादी चिन्तक प्रो० श्री भगवान सिंह ने भाषा और सभ्यता में लगातार हो रहे परिवर्तनों की बात करते हुए उपनिवेशवादी घटाटोप में खो गयी भारतीय सभ्यता को खोज निकालने की जरूरत पर बल दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य रखते हुए बांग्ला के प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक प्रो० पवित्र सरकार ने कहा कि भाषा संस्कृति की वाहक होती है। भाषा को बचाना संस्कृति को बचाना है और यह दायित्व हर किसी को लेना होगा।

इन्दौर से आए प्रख्यात लेखक, चित्रकार व पत्रकार प्रभु जोशी ने कहा कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, वह चिन्तन प्रक्रिया का हिस्सा है।

इस अवसर पर 'भाषा-विमर्श' के नवीन अंक का लोकार्पण किया गया। कृष्ण बिहारी मिश्र जैसे वयोवृद्ध पीढ़ी के विद्वानों से लेकर कोलकाता की बिलकुल नवीन पीढ़ी के स्वनामधन्य विद्वानों ने इस कार्यक्रम में बड़ी मात्रा में शिरकत की।

स्वर मुद्रा का लोकार्पण

शास्त्रीय कलाओं पर ध्यान नहीं दिए जाने को लेकर चिन्ता जताते हुए वरिष्ठ कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी ने कहा कि हमारे यहाँ शास्त्रीय कलाएं तो उपस्थित हैं लेकिन उनका विश्लेषण करने वाली आलोचना बहुत कम है। खासतौर से हिन्दी आलोचना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी महान कला को देखने वाली एक तरह की छुटभैया आलोचना ही है।

वाजपेयी यहाँ एलयांस फ्रांसेस सभागार में शास्त्रीय संगीत और शास्त्रीय नृत्य की वैचारिकी पर एकाग्र पुस्तक-पत्रिका 'स्वरमुद्रा' के लोकार्पण के अवसर पर बोल रहे थे। 'स्वरमुद्रा' का लोकार्पण प्रसिद्ध नृत्यांगना यामिनी कृष्णमूर्ति ने किया। यह पुस्तक-पत्रिका रजा फाउंडेशन की नई पहल है। वाजपेयी ने शास्त्रीय संगीत और नृत्य के अलावा चित्रकला के क्षेत्र की भी कई हस्तियों का नाम लेकर कहा कि हमारे यहाँ बड़े कलाकारों पर कोई गम्भीर आलोचनात्मक पुस्तक नहीं है। उन्होंने पूछा कि कलाओं को लेकर हमारे यहाँ जो शास्त्र-रचना होती थी वह बन्द क्यों हो गई?

यामिनी कृष्णमूर्ति ने कहा कि हमारी शास्त्रीय कलाओं के लिए ऐसी पत्रिकाओं की खास तौर से जरूरत है। नृत्य समीक्षक डॉ० सुनील कोठारी ने इस बात की शिकायत की कि आज अखबारों ने आलोचना को मार दिया है। उन्होंने कहा कि आज कलाकार कई हैं लेकिन कला के क्षेत्र में क्या हो रहा है इसको जानने का कोई माड्यूल नहीं है।

कविता का जन्म कथा कहने के लिए हुआ है

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में राष्ट्रीय संगोष्ठी 'समकालीन चुनौतियाँ और हिन्दी कविता का युवा स्वर' का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में विभागीय पत्रिका 'मंथन' का विमोचन किया गया। सत्र की अध्यक्षता माननीय कुलपति श्री विक्रम चन्द्र गोयल ने की। मुख्य अतिथि श्री विभूति नारायण राय, वरिष्ठ कवि पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी, प्रो० जितेन्द्र श्रीवास्तव आदि ने अपने वक्तव्यों द्वारा समकालीन कविता के स्वरूप, चुनौतियों सहित समकालीन काव्य परिदृश्य पर व्यापक चर्चा की।

लोकार्पण एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

विगत दिनों मध्य प्रदेश में हिन्दी लेखिका संघ, दमोह के वार्षिकोत्सव में श्रीमती लक्ष्मी ताम्रकार के काव्य-संकलन 'ओ कस्तूरी मन' एवं संस्था की स्मारिका 'सुरम्या 2014' का विमोचन म०प्र० के वित्त एवं वाणिज्य तथा जल-संसाधन मंत्री श्री जयंत कुमार मलैया के मुख्य आतिथ्य व प्रो० त्रिभुवननाथ शुक्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह में सर्वश्री रघुनन्दन चिले के सौजन्य से श्री जगदीश श्रीवास्तव को 'रामकुँवर चिले स्मृति अलंकरण', लक्ष्मी ताम्रकर के सौजन्य से श्री सत्यमोहन वर्मा को 'रामप्यारी स्मृति अलंकरण', पुष्पा चिले के सौजन्य से श्री चन्द्रप्रकाश जायसवाल को 'गुलाबरानी सोनी स्मृति अलंकरण', अमीता पटेल के सौजन्य से श्रीमती प्रेमलता नीलम को 'सीताबेन पटेल स्मृति अलंकरण', सावित्री तिवारी के सौजन्य से श्रीमती लक्ष्मी ताम्रकार को 'बनवारीलाल गुरु उर्फ बैनी कवि अलंकरण' तथा इन्द्रजीत कौर भट्टी के सौजन्य से श्रीमती पुष्पा चिले को 'रामकौर स्मृति अलंकरण' प्रदान किया गया। संचालन डॉ० रघुनन्दन चिले ने एवं आभार ज्ञापन डॉ० इन्द्रजीत भट्टी ने किया।

बुंदेली भाषा का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

विगत दिनों भोपाल में अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित बुंदेली भाषा के राष्ट्रीय अधिवेशन में मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री रामनरेश यादव ने डॉ० जयकुमार 'जलज' को 'छत्रसाल पुरस्कार', श्रीमती वीणा श्रीवास्तव को 'बुंदेल त्रयी पुरस्कार', डॉ० राज गोस्वामी को 'जगनिक सम्मान', डॉ० एम०एम० पांडे को 'चतुरेश पुरस्कार', डॉ० कामिनी सेवढ़ा को 'श्रीमती शांति देवी जैन पुरस्कार' प्रदान किए। इस अवसर पर डॉ० कामिनी की कृति 'उरैन' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया।

महाकवि सूरदास पर संगीतमय नाट्य प्रस्तुति

विगत 28 मई को दिल्ली के हिन्दी भवन में पं० गोपालप्रसाद व्यास की पुण्यतिथि के अवसर पर श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी के सान्निध्य में श्री शेखर सेन ने महाकवि सूरदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एकल संगीतमय नाट्य प्रस्तुति दी। संचालन डॉ० गोविन्द व्यास ने किया।

राष्ट्रीय बाल-साहित्य संगोष्ठी सम्पन्न

विगत 6, 7 एवं 8 जून को नैनीताल में महादेवी सृजन पीठ एवं उत्तराखंड बाल-साहित्य संस्थान के सहयोग से बाल-प्रहरी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय बाल-साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह के समापन पर डॉ० राष्ट्रबंधु के निर्देशन में पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। प्रथम दिवस में काव्य-गोष्ठी के उपरान्त श्री रमेश तैलंग की अध्यक्षता में 'बाल-साहित्य की दशा और दिशा' विषय पर गम्भीर मंथन हुआ। मुख्य अतिथि प्रो० होशियार सिंह धामी एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजेश नेगी थे। दूसरे दिन 'बाल-साहित्य एवं बाल कहानी-विश्लेषण' विषयक परिचर्चा की अध्यक्षता सर्वश्री राकेश चक्र एवं विमला भंडारी ने की। अगले सत्र में 'बाल-साहित्य : कल्पना और यथार्थ' विषयक परिचर्चा की अध्यक्षता श्रीमती सुकीर्ती भटनागर ने की। मुख्य अतिथि श्रीमती मधु भारती थीं। तीसरे दिन श्री लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' की अध्यक्षता में 'बाल-साहित्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण' विषयक परिचर्चा में मुख्य वक्ता प्रो० अजय जनमेजय ने अपने विचार व्यक्त किए।

सम्मान-पुरस्कार

भोजपुरी गीतकार को भाषा सम्मान

भोजपुरी गीतकार पं० हरिराम द्विवेदी को विगत दिनों एक वर्ष पूर्व घोषित साहित्य अकादमी के भाषा सम्मान से सम्मानित किया गया।

पराड़कर स्मृति भवन, वाराणसी में आयोजित सम्मान समारोह में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने कहा कि हरि भइया की खासियत है कि वे विशुद्ध कवि हैं। केवल कविता लिखते हैं। पं० हरिराम द्विवेदी को भाषा सम्मान में ताम्र फलक और एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी गई। इस अवसर पर डॉ० कमलेशदत्त त्रिपाठी, डॉ० दयानिधि मिश्र, डॉ० सदानंद शाही, डॉ० वशिष्ठ अनूप, डॉ० नीरजा माधव, डॉ० रामसुधार सिंह, प्रो० श्रद्धानंद आदि उपस्थित रहे।

अशोक चक्रधर को 'काव्य कुम्भ' सम्मान

इलाहाबाद। जनकवि कैलाश गौतम की स्मृति में विगत दिनों उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र में अखिल भारतीय कविता सम्मेलन, मुशायरा और सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इसमें पद्मश्री प्रोफेसर अशोक चक्रधर को कैलाश गौतम काव्य कुम्भ 2014 सम्मान से सम्मानित किया गया जिसके अन्तर्गत उन्हें शाल, स्मृति चिह्न, अंगवस्त्रम् और धनराशि प्रदान की गयी।

प्रख्यात कवि केदारनाथ सिंह को ज्ञानपीठ पुरस्कार

हिन्दी की आधुनिक पीढ़ी के प्रख्यात कवि केदारनाथ सिंह को 2013 के लिए देश के सर्वोच्च साहित्य सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

यह सम्मान पाले वाले वह हिन्दी के दसवें रचनाकार हैं। पुरस्कार के रूप में उन्हें 11 लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र और वाग्देवी की प्रतिमा प्रदान की जायेगी। ज्ञानपीठ की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, सीताकांत महापात्रा की अध्यक्षता वाली समिति ने केदारनाथ सिंह के नाम पर मुहर लगाई।

नामचीन शायरों और लेखकों को पुरस्कार

लखनऊ। उर्दू अकादमी की ओर से विगत दिनों उत्कृष्ट शायरों और उर्दू लेखकों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की गई। अकादमी के चेयरमैन नवाज देवबंदी ने विगत तीन वर्षों के पुरस्कारों की घोषणा की। तीन श्रेणियों के अन्तर्गत घोषित पुरस्कारों में वर्ष 2011-12 में 20 हजार के पाँच, 15 हजार के 10, दस हजार के 15 और पाँच हजार के 56 लोगों को पुरस्कार देने की घोषणा की गई। वर्ष 2012-13 में 20 हजार के पाँच, 15 हजार के दस, 10 हजार के 15 और पाँच हजार के 53 लोगों को पुरस्कार की सूची में रखा गया है। वर्ष 2013-14 में 20 हजार के पाँच, 15 हजार के 10, 10 हजार के 15 और पाँच हजार के 46 लोगों को पुरस्कार के लिए चुना गया। **इन्हें मिलेंगे—20 हजार वर्ष** 2011-12 : डॉ० मलिकजादा मंजूर अहमद, सैयद फजले इमाम रिजवी, डॉ० मौलवी मुहम्मद इस्माइल, अंजुम उस्मानी और खालिद जावेद। वर्ष 2012-13 : काजी उबैदुर्रहमान, प्रो० इफ्तेखार आलम खाँ, डॉ० सीवाइएसयू खान, अतीकुल्लाह और अबुल कलाम मकासिमी। वर्ष 2013 -14 : मुजफ्फर हनफी, हनीफ नकवी, अनवर जलालपुरी, नसीम निकहत और मामून रशीद।

गुलजार को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

रचनाकार और मशहूर फिल्म निर्देशक गुलजार को प्रतिष्ठित दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारत में फिल्मी हस्तियों को दिया जाने वाला यह सर्वोच्च सम्मान है। 'आँधी', 'मौसम', 'मेरे अपने', 'कोशिश', 'खुशबू', 'अंगूर', 'लिबास' और 'माचिस' जैसी फिल्मों का निर्देशन कर चुके 79 वर्षीय गुलजार यह सम्मान प्राप्त करने वाले 45वें व्यक्ति हैं।

गीतांजलि श्री और प्रभात त्रिपाठी को वैद सम्मान

इण्डिया इंटरनेशनल सेण्टर में आयोजित एक समारोह में प्रख्यात चित्रकार सैयद हैदर रज़ा ने हिन्दी के दो रचनाकारों प्रभात त्रिपाठी और गीतांजलि श्री को 'वैद सम्मान' से सम्मानित किया। श्री त्रिपाठी को 2011-12 और गीतांजलि श्री 2012-13 के लिए यह सम्मान दिया गया है।

यह सम्मान चित्रकार मनीष पुष्कले ने वयोवृद्ध कथाकार-नाटककार कृष्ण बलदेव वैद के नाम पर स्थापित किया है। इस सम्मान के अन्तर्गत प्रशस्ति पत्र और एक लाख रुपये की राशि दी जाती है।

पद्म सम्मान

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने विगत दिनों अभिनेता परेश रावल, टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस और लेखक रस्किन बांड सहित 56 गणमान्य हस्तियों को पद्म सम्मान से सम्मानित किया।

योग का दुनियाभर में प्रचार-प्रसार करने के लिए जाने-माने योग गुरु बेल्लूर कृष्णामाचार सुदराजा अइयंगर को पद्म विभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस, प्रसिद्ध वैज्ञानिक पी० बलराम, जस्टिस दलवीर भंडारी, लेखक रस्किन बांड, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव तिरुमलचारी रामासामी को पद्मभूषण सम्मान दिया गया। मैनेजमेंट गुरु मृत्युंजय बी० अथरैया, कृषि वैज्ञानिक मडप्पा महादेवप्पा, इसरो के चेयरमैन के० राधाकृष्णन, आइआइटी दिल्ली के प्रोफेसर विनोद प्रकाश शर्मा, लेखक व शिक्षाशास्त्री गुल मोहम्मद शेख को भी पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। गुजराती विश्वकोष के संस्थापक दिवंगत धीरूभाई प्रेमशंकर ठाकर को भी पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। इस वर्ष 127 हस्तियों को पद्म सम्मान देने की घोषणा हुई थी जिनमें 66 लोगों को 31 मार्च को सम्मानित किया जा चुका है।

अशोक वाजपेयी को दूसरा पोलिश सम्मान

हिन्दी के वरिष्ठ कवि, आलोचक और संस्कृतिकर्मी अशोक वाजपेयी को पोलैंड सरकार के विदेश मंत्रालय ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में खासतौर से पोलैंड और भारत के बीच सम्बन्ध गहरा करने में योगदान देने के लिए 'बेने मेरितो' सम्मान से विभूषित करने का फैसला किया है।

ज्ञातव्य है कि इससे पहले वाजपेयी को पोलिश सरकार ने अपने उच्च सिविल सम्मान 'ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ क्रास' से सम्मानित किया था। ज्ञात सूत्रों के अनुसार, गोवा विश्वविद्यालय के बोरकर पीठ में अतिथि आचार्य के रूप में भी अशोक वाजपेयी के कार्यकाल को अगले दो वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है।

मीरा स्मृति पुरस्कार

वर्ष 2013 का मीरा स्मृति पुरस्कार दीपक श्रीवास्तव और विमल चन्द्र पाण्डेय को संयुक्त रूप से दिया जाएगा। इस बार का पुरस्कार दीपक श्रीवास्तव (लखनऊ) को उनके कहानी संकलन की पाण्डुलिपि 'सत्ताइस साल की साँवली लड़की' और विमल चन्द्र पाण्डेय (वाराणसी) को उनके कहानी-संग्रह की पाण्डुलिपि 'उत्तर प्रदेश की खिड़की' के लिए दिया जाएगा।

अब तक यह पुरस्कार प्रकाशित कृतियों पर दिया जाता था लेकिन 2013 से यह अप्रकाशित पाण्डुलिपियों पर दिया जाएगा। इस बार पुरस्कार की राशि 25 हजार रुपये है। पुरस्कार के संयुक्त विजेताओं को 15-15 हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति-पत्र, शॉल और श्रीफल दिया जाएगा।

भोजपुरी फेस्टिवल में सम्मानित हुईं विभूतियाँ

विश्व भोजपुरी उत्थान कल्याण समाज की ओर से भोजपुरी की पाँच विभूतियों को सम्मानित किया गया। हावड़ा में आयोजित भोजपुरी फेस्टिवल 2014 में विख्यात भोजपुरी गायिका पद्मश्री शारदा सिन्हा को महेन्द्र मिश्र सम्मान, कालिदास के संस्कृत काव्य 'मेघदूत' के हिन्दी व अंग्रेजी गीति-नाट्य रूपांतरकार मृत्युंजय कुमार सिंह को भिखारी ठाकुर सम्मान, भोजपुरी फिल्म निर्माता शशिधर सिंह को नज़ीर हुसैन सम्मान, वरिष्ठ पत्रकार तारकेश्वर मिश्रा को राहुल सांकृत्यायन सम्मान एवं साहित्यकार डॉ० अभिज्ञात को कबीर सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान महामण्डलेश्वर एच एच स्वामी डॉ० उमाकांतानंद सरस्वतीजी महाराज (मारीशस) एवं सांसद सुल्तान अहमद ने प्रदान किया।

'वाशिंगटन पोस्ट' और 'गार्जियन' को पुलित्जर पुरस्कार

पत्रकारिता के क्षेत्र में दिए जाने वाले मशहूर पुलित्जर पुरस्कार के अन्तर्गत इस वर्ष सार्वजनिक सेवा का पुरस्कार समाचार पत्र 'वाशिंगटन पोस्ट' और 'गार्जियन' को संयुक्त रूप से दिया गया है। अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा एजेन्सी (एनएसए) की गुप्त निगरानी योजनाएँ लीक करने वाले एडवर्ड स्नोडेन को लेकर दोनों समाचार-पत्रों द्वारा बेहतरीन रिपोर्टिंग के लिए इन्हें संयुक्त रूप से यह पुरस्कार दिया गया है।

'वर्तमान साहित्य' पत्रिका का पुरस्कार समारोह

अलीगढ़ से डॉ० नमिता सिंह के सम्पादन में निकलने वाली मासिक पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' की ओर से हर वर्ष की भाँति इस बार भी 'मलखान सिंह सिसौदिया कविता-पुरस्कार' और 'कमलेश्वर कहानी-पुरस्कार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मलखान सिंह कविता-पुरस्कार सन्तोष चतुर्वेदी को 'पहली बार' के लिए वरिष्ठ कवि इब्बार रब्बी द्वारा प्रदान किया गया जबकि कमलेश्वर कहानी-पुरस्कार अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' को 'गुडवर्क' के लिए सुप्रसिद्ध कहानीकार महेश दर्पण द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री इब्बार रब्बी ने कविता की रचनात्मकता और संवेदना पर विस्तार से चर्चा की। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में सुप्रसिद्ध उर्दू कथाकार प्रो० अब्दुल काज़ी सत्तार ने सभी रचनाकारों को बधाई दी।

मुद्राराक्षस को कैफी आज़मी अवार्ड

साहित्यकार मुद्राराक्षस और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रो० शारिब रुदौलवी को कैफी आज़मी अवार्ड से अलंकृत किया गया। पिछले दिनों लखनऊ में सम्मानस्वरूप उन्हें स्मृतिचिह्न और 51 हजार रुपये दिये गए। यह अलंकरण ऑल इण्डिया कैफी आज़मी एकेडमी की ओर से अली सरदार ज़ाफरी की जन्मशती पर आयोजित सम्मान समारोह में हुआ।

नरेश मेहता सम्मान

जाने-माने लोक-विशेषज्ञ वसंत निरगुणे को विगत दिनों राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा 31 हजार के नरेश मेहता वांग्मय सम्मान से अलंकृत किया गया। निमाड़ अंचल के महेश्वर में जन्मे निरगुणे लोक और आदिवासी संस्कृति, कला और साहित्य के उन अध्येताओं में हैं, जिन्होंने लोक संस्कृति और लोक साहित्य के शोध और उन्नयन के लिए स्वयं को समर्पित किया है। उन्होंने जनजातीय और लोक परंपरा पर पाँच लघु फिल्मों का निर्माण भी किया है।

विजय शेषाद्रि को पुलित्जर पुरस्कार

भारत में जन्मे विजय शेषाद्रि ने अपने कविता संग्रह '3 सेक्शन्स' के लिए कविता श्रेणी में वर्ष 2014 का पुलित्जर पुरस्कार जीता है। कोलंबिया विश्वविद्यालय ने न्यूयॉर्क में 98वें वार्षिक पुलित्जर पुरस्कारों की घोषण की। घोषणा में शेषाद्रि की '3 सेक्शन्स' को सम्मोहक कविता-संग्रह बताया गया। विजय शेषाद्रि पुलित्जर पुरस्कार जीतने वाले भारतीय मूल के पाँचवें व्यक्ति हैं।

पहला बिम्ब सम्मान गोपाल चतुर्वेदी को

'लगान', 'स्वदेश', 'हलचल' और 'जोधा अकबर' जैसी फिल्मों की कहानी लिखने वाले लोकप्रिय व्यंग्यकार के०पी० सक्सेना की स्मृति में पहला बिम्ब सम्मान समारोह उनकी 82वीं जयन्ती पर जयशंकर सभागार में हुआ। बिम्ब कला केन्द्र की ओर से पहला सम्मान वरिष्ठ व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी को दिया गया।

गोइन्का पुरस्कार एवं सम्मान समारोह

जैन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के चेयरमैन डॉ० चेनराज रॉयचंद जी की अध्यक्षता में गुलबर्गा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा घोषित 'पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड़ साहित्य सम्मान' से धारवाड़ की सुप्रसिद्ध कन्नड़ साहित्यकार एवं कर्नाटक साहित्य अकादमी की नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रो० मालती पट्टणशेट्टी को सम्मानित किया गया। कर्नाटक के वरिष्ठ हिन्दीसेवी श्री रंगनाथराव राघवेन्द्र निडगुंदिजी को, 'गोइन्का हिन्दी साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया।

इसी अवसर पर साहित्येतर क्षेत्र के 'दक्षिण ध्वजधारी सम्मान' से कर्नाटक की सिरमौर प्रतिष्ठित समाजसेवी धर्मस्थला की श्रीमती हेमावती वी० हेगड़े को सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह 'भारतीय विद्या भवन' बेंगलुरु में आयोजित था। इस समारोह के मुख्य अतिथि कॉर्पोरेशन बैंक (मेंगलूर) के सहायक महाप्रबन्धक डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल थे।

लीलावती सृजन फाउंडेशन द्वारा तीन साहित्यकार अलंकृत

हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने वाले रचनाकर्मियों को सम्मानित करने के लिए 'लीलावती सृजन फाउंडेशन' द्वारा संकल्पित सम्मानों के अन्तर्गत भारत स्तर पर किसी भी विधा में लगातार सक्रिय एक वरीय रचनाकार को देय 'रामदास तिवारी सृजन सम्मान' भोपाल की चर्चित कथाकार श्रीमती उर्मिला शिरीष को दिया गया।

बिहार/झारखंड के किसी एक व्यंग्यकार हेतु 'सिद्धिनाथ तिवारी व्यंग्यश्री सम्मान' मोतिहारी के युवा व्यंग्यकार शशिकांत सिंह 'शशि' को और बिहार/झारखंड की किसी एक कथा लेखिका हेतु 'विद्या तिवारी वामाश्री सम्मान' पूर्णिया की श्रीमती निरुपमा राय को दिया गया। समारोह में लोकप्रिय साहित्यकार नरेन्द्र कोहली द्वारा सम्मान समर्पित किए गए।

रांची विश्वविद्यालय के पहले बैच के स्नातक नरेन्द्र कोहली जी का, कुलपति ने विश्वविद्यालय की ओर से अभिनन्दन किया और राँची विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न भेंट कर उनका सम्मान किया।

अन्तरर्राष्ट्रीय सम्मान घोषित

सीहोर, कनाडा में घोषणा की गई कि 'ढींगरा फैमिली फाउण्डेशन, अमेरिका' तथा 'हिन्दी चेतना, कनाडा' द्वारा प्रारम्भ किए गए सम्मानों (2010-13) हेतु सर्वश्री हरिशंकर आदेश (त्रिनिदाद) को समग्र साहित्यिक अवदान के लिए 'ढींगरा फैमिली फाउण्डेशन-हिन्दी चेतना अन्तरराष्ट्रीय साहित्य सम्मान', महेश कटारे (भारत) को उपन्यास 'कामिनी काय कांतारे' एवं सुदर्शन प्रियदर्शिनी (अमरीका) को कहानी-संग्रह 'उत्तरायण' के लिए 'ढींगरा फैमिली फाउण्डेशन-हिन्दी अन्तरराष्ट्रीय कथा सम्मान' 26 जुलाई 2014 को कनाडा के स्कारबोरो सिविक सेण्टर में आयोजित कार्यक्रम में दिए जायेंगे। सभी रचनाकारों को शाल, श्रीफल, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिह्न, पाँच सौ डालर की सम्मान राशि, हवाई यात्रा का व्यय आदि प्रदान किया जाएगा एवं वहाँ कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों का भ्रमण करवाया जाएगा।

डॉ० नरेन्द्र कोहली को 'स्वामी विवेकानन्द पुरस्कार'

विगत दिनों रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट, कोलकाता द्वारा डॉ० नरेन्द्र कोहली को स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित लब्धप्रतिष्ठ बहुखंडीय उपन्यास 'तोड़ो, कारा तोड़ो' के लिए 'स्वामी विवेकानन्द पुरस्कार 2014' से सम्मानित किया गया। एक लाख रुपये की राशि का यह सम्मान उन्हें रामकृष्ण मठ के अध्यक्ष स्वामी प्रभानंदजी ने प्रदान किया।

आलोक श्रीवास्तव को अमेरिका में मिला अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मान

वाशिंगटन। हिन्दी के चर्चित ग़ज़लकार आलोक श्रीवास्तव को हिन्दी-ग़ज़ल में उनकी प्रतिबद्धता के लिए वाशिंगटन में 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मान' से सम्मानित किया गया। अमेरिका में बसे भारतीयों के साथ हिन्दी के कई जाने-माने साहित्यकारों और विद्वानों की मौजूदगी में संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की ओर से आलोक को यह सम्मान भारतीय दूतावास के काउंसलर शिव रतन के हाथों दिया गया। सम्मानस्वरूप सम्मान-पत्र के साथ प्रतीक चिह्न भी प्रदान किया गया।

वर्ष 2007 में प्रकाशित आलोक के पहले ग़ज़ल संग्रह 'आमीन' से उन्हें विशेष पहचान मिली। हाल के वर्षों में उन्हें रूस का प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, म०प्र० साहित्य अकादेमी का दुष्यंत कुमार पुरस्कार और परम्परा ऋतुराज सम्मान भी हासिल हो चुका है।

मनोहर श्याम जोशी पुरस्कार

हेग (नीदरलैंड)। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान हिन्दी पत्रकारिता में लम्बे समय तक महत्वपूर्ण कार्य के लिए अमर उजाला हल्द्वानी के स्थानीय सम्पादक सुनील शाह को मनोहर श्याम जोशी और वरिष्ठ पत्रकार डॉ० गिरीश रंजन तिवारी को हिन्दी गौरव सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नीरलैंड में भारतीय राजदूत राजेश नंदन प्रसाद ने उन्हें ट्रॉफी और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

विष्णु नागर सम्मानित

हिन्दी के पत्रकार, सम्पादक एवं लेखक विष्णु नागर को पहले शिवकुमार स्मृति सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रख्यात आलोचक डॉ० रमेश कुन्तल मेघ ने उन्हें विगत 21 जून को वल्लभनगर (गुजरात) में यह पुरस्कार दिया।

मूर्ति देवी पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ का 27वाँ मूर्तिदेवी पुरस्कार वर्ष 2013 के लिए मलयालम लेखक सी श्री राधाकृष्णन को देने की घोषणा की गई है। उनकी पुस्तक 'तिक्कटल कडंजा तिरुमधुरम' के लिए उन्हें यह पुरस्कार दिया जाएगा। इसकी घोषणा एम० वीरप्पा मोइली के नेतृत्व वाली 7 सदस्यीय कमेटी ने बैठक के बाद की। यह किताब 15वीं शताब्दी के महान संत रामानुजम के जीवन पर आधारित है।

कनाडा यूनिवर्सिटी से टाटा को मानद डॉक्टर उपाधि

कनाडा की विश्व प्रसिद्ध यॉर्क यूनिवर्सिटी से टाटा समूह के पूर्व चेयरमैन रतन टाटा को विधि की मानद उपाधि मिली है। यह सम्मान कॉरपोरेट सोशल जिम्मेदारी को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका के लिए दिया गया है। रतन टाटा को यॉर्क यूनिवर्सिटी के शुलिच स्कूल ऑफ बिजनेस में सप्ताहांत के दौरान आयोजित 2014 वसंत दीक्षांत समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। प्रोफेसर डर्क मेटेन द्वारा पढ़े गये प्रशस्ति पत्र के अनुसार, टाटा के जीवन और करियर की सबसे प्रेरणादायक बात यह है कि उन्होंने सदैव पारम्परिक ज्ञान से हटकर काम किया और अपने दृष्टिकोण को हकीकत बनाने के लिए कड़ी मेहनत की।

कलाम को एडिनबर्ग ने दी मानद उपाधि

लन्दन। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में योगदान के लिए एडिनबर्ग विश्वविद्यालय ने विगत दिनों डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि प्रदान की है।

प्रज्ञा रावत को वागीश्वरी सम्मान

कवयित्री प्रज्ञा रावत को मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा संचालित स्व० हनुमान प्रसाद तिवारी स्मृति, वागीश्वरी सम्मान, वर्ष 2012 से पुरस्कृत किया गया है। यह सम्मान उन्हें उनके चर्चित कविता-संग्रह 'जो नदी होती' के लिए प्रदान किया गया। सम्मेलन द्वारा आयोजित एक समारोह में उन्हें यह सम्मान वरिष्ठ आलोचक धनंजय वर्मा और प्रतिष्ठित कथाकार सुधा अरोड़ा की उपस्थिति में दिया गया।

कलमकार पुरस्कार

नई दिल्ली। युवा कथाकार योगिता यादव को उनकी कहानी 'झीनी झीनी बिनी रे चदरिया' के लिए कलमकार फाउण्डेशन का द्वितीय पुरस्कार दिया गया है। संयुक्त रूप से मिले पुरस्कार की दूसरी विजेता रजनी गुप्ता (कहानी 'दो आवाजें') हैं। प्रथम पुरस्कार इन्दिरा दांगी की कहानी 'शहर की सुबह' के नाम रहा। कलमकार फाउंडेशन ने तीन तृतीय पुरस्कार तथा दस सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किए हैं। फाउंडेशन की प्रवक्ता वन्दना सिंह के अनुसार प्रतियोगिता में देशभर से तकरीबन 1200 कहानियाँ शामिल हुईं। गहन-विमर्श के बाद प्राप्त 1200 कहानियों में 32 कहानियाँ छाँटी गईं जिसके आधार पर 16 कहानीकारों का चयन किया गया। पुरस्कार वितरण दिल्ली में किया जाएगा। फाउण्डेशन पुरस्कृत कहानियों का एक संग्रह भी प्रकाशित करेगा।

डॉ० सुंदरलाल कथूरिया को 'वेदश्री सम्मान'

विगत 11 मई को देहरादून के वैदिक साधना आश्रम, तपोवन के सभागार में अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा 11वें स्वामी दीक्षानंद स्मृति-दिवस के अवसर पर डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया को 'वेदश्री सम्मान' से विभूषित किया गया। सर्वश्री स्वामी दिव्यानंद सरस्वती, दर्शन अग्निहोत्री, वेदप्रकाश गुप्ता, प्रेमप्रकाश शर्मा आदि ने समवेत रूप से मोतियों की माला, शॉल, प्रशस्ति-पत्र युक्त महर्षि दयानंद का चित्र, प्रतीक-चिह्न, ग्यारह हजार रुपए की सम्मान राशि (चेक) तथा ग्रंथादि भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

श्री नरेश कुमार 'उदास' सम्मानित

जम्मू कश्मीर साहित्य अकादमी ने वर्ष 2012 के लिए श्री नरेश कुमार 'उदास' को उनके कहानी संकलन 'माँ गाँव नहीं छोड़ना चाहती' के लिए 'श्रेष्ठ कृति सम्मान' स्वरूप इक्यावन हजार रुपए की राशि, शॉल, स्मृति-चिह्न तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान करने की घोषणा की है। श्रीनगर में निकट भविष्य में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री श्री उमर अब्दुल्ला स्वयं उपस्थित रहकर उन्हें सम्मानित करेंगे।

कवि अनुज लुगुन को सम्मान

वाराणसी। सावित्री त्रिपाठी फाउण्डेशन का वार्षिक सावित्री त्रिपाठी स्मृति सम्मान हिन्दी के युवा कवि अनुज लुगुन को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के सहयोग से राधाकृष्णन सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में प्रदान किया गया। अनुज लुगुन ने पिछले पाँच वर्षों में हिन्दी कविता की मुख्यधारा में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। सम्मान की निर्णायक समिति में प्रो० काशीनाथ सिंह, प्रो० चौथीराम यादव, प्रो० बलराज पाण्डेय, डॉ० आशीष त्रिपाठी और डॉ० संजय श्रीवास्तव शामिल थे।

मुंशी नवल किशोर के नाम शुरू होगा पुरस्कार

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डॉ० अजीज कुरैशी ने रामपुर रजा पुस्तकालय की ओर से मुंशी नवल किशोर पुरस्कार शुरू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि संस्कृत की दुर्लभ किताबों को संरक्षित करने की हरसम्भव कोशिश की जाए।

प्रतियोगिता परिणाम घोषित

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित वर्ष 2013 की नौवीं नवलेखन प्रतियोगिता का एक लाख रुपये का पुरस्कार श्री हरेप्रकाश उपाध्याय के उपन्यास 'बखेड़ापुर' को दिया जाएगा। चार अन्य उपन्यासों 'आठवाँ रग पहाड़ गाथा' (प्रदीप जिलवाने), 'जन्नत जाविदाँ' (उमा), 'कैनवास पर प्रेम' (विमलेश त्रिपाठी) तथा 'हवेली सनातनपुर' (इन्दिरा गाँधी) को प्रकाशन हेतु अनुशंसित किया गया है।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान के सहयोग से सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला सम्मान इस बार ग़ज़ल विधा पर दिया जायेगा। पुरस्कृत रचनाकार को इक्यावन हजार रुपये नकद, शाल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया जायगा। प्रविष्टियाँ 31 अगस्त 2014 के पूर्व संयोजक के पते पर अवश्य पहुँचा दें।

सम्पर्क : कमर मेवाड़ी, संयोजक, आचार्य निरंजननाथ सम्मान 2014, सम्बोधन, कांकरोली-313324, जिला : राजसमंद (राजस्थान), मोबाइल : 09829161342

साल 2013 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

पुस्तक परिचय

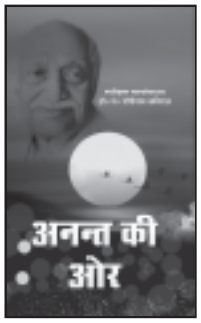

अनन्त की ओर

म०म०डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

अनुवादक :

एस०एन० खण्डेलवाल

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 416

सजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-93-5146-071-8
अजि. : रु० 270.00 ISBN : 978-93-5146-072-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

स्वनामधन्य महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज के स्वानुभूत अध्यात्म पथ का जो वर्णन उनकी लेखनी द्वारा यत्र-तत्र व्यक्त किया गया था, उसी का संग्रहात्मक प्रयास हिन्दीभाषा के जिज्ञासुओं की सुविधा के लिए प्रस्तुत किया गया है।

मुझे बीस वर्षों तक इन महापुरुष के दर्शन का सौभाग्य इनकी कृपा तथा प्राक्तन कर्मों के फलस्वरूप मिलता रहता था। इनके ही सान्निध्य में आते-जाते रहने के कारण महान् साधक चन्द्रशेखर स्वामी हिरेमठ, डॉ० हरिश्चन्द्र शुक्ल, महान् तांत्रिक डॉ० ब्रजगोपाल भादुड़ी, शिवकल्प योगी, आचार्य रामेश्वर झा, गोपाल शास्त्री 'दर्शनकेशरी', दादा सीतारामजी, ठाकुर जयदेव सिंह आदि महान् विद्वानों से भी वहीं सम्पर्क हो सका था। यह इन महान् मनीषी की ही कृपा थी कि वहाँ कितने अनजाने विद्वानों से परिचय हो सका। न जाने कितने ग्रन्थों का आश्रय मिला, जो निकट बन्धु थे, सम्बन्धी थे, तथापि परमार्थपथिक नहीं थे, उनसे मैं दूर होता गया तथा जो पराये थे तथापि इस अगम पथ के पथिक थे, वे ही मेरे चिरबन्धु हो गये। यही सत्संग का चमत्कार है। यह सत्संग मैंने जिस रूप में पाया था, भले ही उस रूप में अब उपलब्ध नहीं है, तथापि उन महापुरुष का साहित्यरूपी जो कृतित्व उपलब्ध हो रहा है, वह मूर्त्तरूप धारण करके अर्थात् वाङ्मयरूप में सतत विद्यमान है। इसका पठन-चिन्तन तथा अनुशीलन भी उनका ही सत्संग है। इस वाङ्मयरूप के विद्यमान रहने के कारण उन महामनीषी का अभाव भी उतना नहीं खटकता। इस रूप में उन्होंने यथार्थ जिज्ञासुओं के लिए मानो एक सम्बल तथा पथप्रदीप तो छोड़ दिया है। यही उनकी यश:काया है, जो काल के कराल झंझावात में भी यथावत् विद्यमान है।

—एस०एन० खण्डेलवाल

पं० पद्मसिंह शर्मा कृत

सतसई-संहार

('बिहारी-सतसई' की आलोचना)

एवं

संजीवन-भाष्य

('बिहारी-सतसई' की टीका)

पृष्ठ : 452 सम्पादक : **प्रो० कुमार पंकज**

प्रथम विश्वविद्यालय प्रकाशन संस्करण : 2014 ई०

सजि. : रु० 750.00 ISBN : 978-93-5146-069-5
अजि. : रु० 350.00 ISBN : 978-93-5146-070-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पं० पद्मसिंह शर्मा की पुस्तक 'सतसई-संहार' ('बिहारी-सतसई' की आलोचना) सर्वप्रथम सन् 1918 में ज्ञानमण्डल, काशी से प्रकाशित हुई थी। बाद में शर्माजी ने 'बिहारी-सतसई' का 'संजीवन-भाष्य' भी लिखा जो अधूरा रह गया। 'सतसई' के केवल 126 दोहों का भाष्य ही शर्मा जी लिख पाये थे। प्रस्तुत पुस्तक में आलोचना एवं भाष्य एक साथ दिये गये हैं। 'सतसई' की यों अनेक टीकाएँ लिखी गयीं लेकिन इनमें जगन्नाथ दास रत्नाकर का 'बिहारी-रत्नाकर', लाला भगवानदीन 'दीन' की 'बिहारी-बोधिनी' और पद्मसिंह शर्मा के 'संजीवन-भाष्य' का विशिष्ट महत्व है।

पं० पद्मसिंह शर्मा

पं० पद्मसिंह शर्मा का जन्म सन् 1876 ई० में नायकनगला, चाँदपुर, ज़िला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। जाति से यह त्यागी थे और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भूमिहार जन इस 'सरनेम' को लिखते हैं। इनके पिता उमराव सिंह गाँव के मुखिया और ज़मींदार थे। शर्माजी आर्य समाज के प्रचारक थे और इन्होंने गुरुकुल काँगड़ी एवं ज्वालापुर महाविद्यालय (दोनों हरिद्वार में) में अध्यापन कार्य किया था। 'परोपकारी', 'अनाथरक्षक', 'सत्यवादी' और 'भारतोदय' पत्र के सम्पादन के साथ-साथ शर्माजी ने समय-समय पर 'विशाल भारत', 'सुधा' एवं 'स्वतन्त्र' पत्रों के विशेषांकों का अतिथि सम्पादन भी किया था। इनके प्रमुख ग्रन्थ हैं—'सतसई-संहार' एवं 'संजीवन-भाष्य', 'पद्म-पराग'—प्रथम भाग, 'हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी', गद्य गौरव (पाठ्य-पुस्तक), 'प्रदीप-मंजरी' (सम्पादन), 'पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्र'-सं० बनारसीदास चतुर्वेदी। हरिशंकर शर्मा ने 'पद्म-पराग' के द्वितीय भाग की पाण्डुलिपि तैयार की थी लेकिन यह भाग किन्हीं कारणोंवश प्रकाशित नहीं हो सका। पद्मसिंह शर्मा ने नायकनगला स्थित अपने पैतृक आवास का नाम 'काव्य-कुटीर' रखा था। वहीं 07 अप्रैल 1932 ई० को इनका स्वर्गवास हुआ।

हिन्दी भाषा का इतिहास

डॉ० राकेश कुमार द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

आकार : क्राउन

पृष्ठ : 88

अजि. : रु० 60.00 ISBN : 978-93-5146-064-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास के इतिहास से परिचित कराना है। यद्यपि इस विषय पर अनेकश: पुस्तकें उपलब्ध हैं पर अध्ययन-अध्यापन के क्रम में लेखक यह अनुभव करता आया है कि इनमें से अधिकांश पुस्तकें या तो अत्यन्त विस्तृत, दुर्बोध और कठिन हैं या फिर उनकी भाषा-शैली अतिशय क्लिष्ट एवं नीरस है जिसके कारण विद्यार्थियों को इस विषय को समझने और तैयार करने में कठिनाई का अनुभव होता है, वे सुरुचिपूर्ण और सहजता से इसे आत्मसात् नहीं कर पाते। विद्यार्थियों की इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर लेखक ने यह पुस्तक तैयार की है।

हिन्दी भाषा के इतिहास के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए अध्ययन की सुविधा के लिए पुस्तक को कुल चार अध्यायों तथा उनके अन्तर्गत निर्धारित उपअध्यायों में विभक्त किया गया है। अन्त में, परिशिष्ट के अन्तर्गत विद्यार्थियों की तैयारी के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण 'वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी' को भी सम्मिलित किया गया है। विवेचन और विश्लेषण की दृष्टि से इसकी भाषा-शैली को अत्यन्त सरल, सहज और बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है ताकि विद्यार्थी इसे सहजता से आत्मसात् कर सकें।

आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा हिन्दी विषय से प्रतियोगिता की तैयारी करने वाले प्रतियोगियों एवं हिन्दी भाषा की समझ रखने वाले साहित्यनेहियों के लिए अवश्य ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

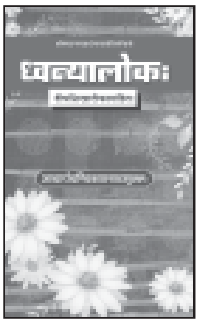

दीपशिखाटीकासहितः

श्रीमदानन्दवर्धनाचार्यविरचितो

ध्वन्यालोकः

टीकाकारः

आचार्यचण्डिकाप्रसादशुक्लः

सम्पूर्ण — तृतीय संस्करण : 2014, पृष्ठ : 432

प्रथम व द्वितीय उद्योत — प्रथम संस्करण : 2014 ई०, पृष्ठ : 208

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-93-5146-067-1 | अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-93-5146-066-4

संस्कृत साहित्यशास्त्र में युगप्रवर्तक ग्रन्थ ध्वन्यालोक 'काव्यालोक' तथा 'सहृदयालोक' नाम से भी आचार्यों द्वारा उल्लिखित हुआ है। साहित्यशास्त्र में इस ग्रन्थ का वही स्थान है जो व्याकरणशास्त्र में पाणिनि की अष्टाध्यायी का तथा वेदान्तदर्शन में बादरायण के ब्रह्मसूत्रों का। इस महान् ग्रन्थ में जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, उन्हीं का समर्थन, व्याख्यान एवं अनुसरण अभिनवगुप्त, मम्मट, हेमचन्द्र, विश्वनाथ तथा पण्डितराज जगन्नाथ आदि धुरीण साहित्यमनीषियों ने किया। इस ग्रन्थरत्न ने पूर्व-प्रचलित रस-गुण-रीति-अलङ्कार आदि काव्याङ्गों का समुचित मूल्याङ्कन कर काव्य में उनके उचित स्थान की व्यवस्था दी तथा काव्य के वास्तविक सौन्दर्य को परखने की चिरसत्य दृष्टि दी।

ध्वन्यालोक में कुल चार उद्योत हैं तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ में कारिका, वृत्ति एवं उदाहरण तीन भाग हैं। कुछ 'सङ्ग्रह', 'परिकर' या 'संक्षेप' श्लोक भी हैं, जो वृत्ति के ही अन्तर्गत माने जाएँगे, क्योंकि वृत्ति में कही गई बातें ही कभी-कभी अन्त में पद्यबद्ध कर दी जाती हैं, जिससे मूल कारिका और विशद रूप से व्याख्यात हो जाती है।

अपने ध्वन्यालोक के द्वारा आनन्दवर्धन ने काव्यरचना का सर्वस्व व्यङ्ग्य अर्थ तथा उसके व्यञ्जक शब्द एवं अर्थ का महत्त्व बताया है। सहृदयजगत् का ध्वनिकाव्य से परिचय करवाया। ध्वनि के विरोधियों को उत्तर दिया। तथा व्यञ्जना व्यापार, व्यङ्ग्य अर्थ एवं व्यञ्जक वर्णपदार्थादि की दृष्टियों से ध्वनि के भेदोपभेदों का विस्तृत सोदाहरण निरूपण किया। काव्य में व्यञ्जनावृत्ति की अनिवार्यता प्रमाणित की। रस, गुण, रीति, अलङ्कार आदि का काव्य में उचित स्थान एवं मूल्य निर्धारित किया। रसावेश की व्यवस्था करते हुए इसके विरोधाविरोध का परिहार बताया।

प्रथम बार काव्य के ध्वनि, गुणीभूतव्यङ्ग्य तथा चित्र तीन वर्ग बताये और उनका तारतम्य बताया जो बाद में मम्मटादि आचार्यों की लेखनी से उत्तम, मध्यम आदि उपाधिवाले बने। कविप्रतिभा के साथ ध्वनिरूप काव्य-रचना का अविनाभाव सम्बन्ध प्रमाणित किया। काव्यजगत् में नवीनता की सृष्टि ध्वनिमयी रचनाओं के द्वारा ही सम्भव बतायी। काव्यसमालोचना का नितान्त नूतन किन्तु सर्वथा सत्य मानदण्ड स्थिर किया।

रसों की संख्या

प्रो० वी० राघवन्

हिन्दी रूपान्तर :

अभिराज

डॉ० राजेन्द्र मिश्र

द्वितीय संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 208

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-93-5146-049-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

तमिलनाडु राज्य के तञ्जौर जनपद में तिरुवानूर नामक अग्रहार में 22 अगस्त 1908 को जनमे, प्रो० वी० राघवन् ने मद्रास विश्वविद्यालय से एम०ए० परीक्षा, पाँच स्वर्णपदकों के साथ उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभाग में अनेक पदों पर कार्य करते हुए सेवानिवृत्ति के अनन्तर भी प्रो० राघवन् केन्द्रीय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू प्रतिष्ठापीठ (फेलोशिप) पर आसीन रहे। अनेक वर्षों तक साहित्य अकादमी की संस्कृत-पत्रिका 'संस्कृत प्रतिभा' के यशस्वी सम्पादक भी रहे।

प्रो० वेङ्कटराघवन् स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत रचनाधर्मिता एवं संस्कृत-प्रतिष्ठापना के प्रकाशस्तम्भ माने जाते हैं। एक लोकप्रिय गहन अध्येता प्राध्यापक, प्रतिभावदात रंगकर्मी, सहृदय कवि, तत्त्वाभिनिवेशी समीक्षक, अनुभूति-प्रवण महामानव, युगसंवेदना के प्रत्यभिज्ञाता तथा देश-विदेश के यात्रानुभवों से सम्पन्न प्रो० राघवन् अर्वाचीन संस्कृत कविता में एक विशिष्ट युग (1940-1980) के प्रतिमान माने जाते हैं। उनका कर्तृत्व विपुल एवं बहुमुखी रहा है।

'दि नम्बर ऑव रसाज़' नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रो० राघवन् की शास्त्र-वैदुषी का निकष माना जाता है। इस ग्रन्थ में प्रो० राघवन् की प्रतिष्ठा से जुड़े पक्ष-विपक्षात्मक विद्वद्विवादों की सांगोपांग समीक्षा तो की ही है, रसों की संख्या पर भी गहन दृष्टि डालते हुए उन्होंने भोज एवं हरिपालादि-अभिमत नये रसों की भी सांगोपांग समीक्षा की है। यह ग्रन्थ नूतन व्यभिचारी भावों की शास्त्रनिष्ठता पर भी गम्भीर मन्तव्य प्रस्तुत करता है। इतना ही नहीं, समीक्षा के अनेक अभिनव वातायन भी खुलते दीखते हैं, इस ग्रन्थ के अनुशीलन से।

उत्तर-औपनिवेशिक दौर में हिन्दी-शोधालोचना

डॉ० राजकुमार

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

आकार : रायल

पृष्ठ : 136

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-93-5146-068-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यूरोप केन्द्रित दृष्टि के टूटने का सुफल साहित्य-संस्कृति के अध्ययन के क्षेत्र में भी दिखाई पड़ता है। इस पुस्तक में ऐसे लेख हैं जो उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में परवान चढ़ीं साहित्य और संस्कृति की अवधारणा और भूमिका को प्रश्नांकित करते हैं और इसके बारे में नये सिरे से सोचने के लिए हमें विवश करते हैं। साहित्य और संस्कृति की अध्ययन-दृष्टि में दिखाई पड़ने वाला यह बदलाव इस मायने में बहुत विचारोत्तेजक है कि वह हमें नये ढंग से सोचने-समझने के लिए आमन्त्रित करता है।

इस पुस्तक में ज्यादातर ऐसे ही लेख रखे गये हैं, जिनमें कुछ न कुछ ऐसा है, जो नया है और हिन्दी-ज्ञान की सामान्य समझ को चुनौती देता है। ज्ञान के क्षेत्र में सभी की सहमति न पहले अनिवार्य थी, न आज अनिवार्य है। इसलिए मेरी ऐसी इच्छा बिल्कुल नहीं है कि लेखों को पढ़ते ही आप उनके कायल हो जायें। इतनी इच्छा अवश्य है कि अपने पूर्वाग्रहों को थोड़ा ढीला कर, इन्हें गम्भीरता से पढ़ें। ये लेख इस बात को एक सीमा तक काटते हैं कि हिन्दी में अच्छा शोध नहीं हो रहा है, क्योंकि ये सभी लेख गम्भीर शोध के आधार पर ही अस्तित्व में आये हैं। इनमें इमरे बंघा को छोड़कर बाकी सभी लेख ऐसे लोगों ने लिखे हैं, जो उदीयमान अध्येताओं की श्रेणी में भी नहीं आते। लेकिन इनके लेख किसी से कमतर नहीं हैं।

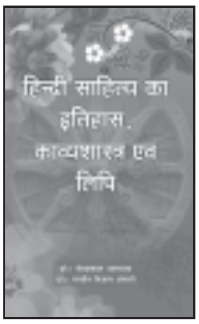

हिन्दी-साहित्य का इतिहास, काव्यशास्त्र एवं लिपि

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय
डॉ० परवीन निज़ाम अंसारी

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 160

अजि. : रु० 75.00 **ISBN : 978-93-5146-063-3**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साहित्य मानव-मन की सहज अनुभूति एवं चेतना का मूर्त रूप है। इसका फलक व्यापक, विस्तृत एवं बहुआयामी है। सही अर्थों में साहित्य मानवता का पोषक एवं सामाजिक गतिविधियों का प्रस्तोता होता है। इसका मूल उपजीव्य हित-भावना है। समर्थ साहित्यकार प्राय: समाज के प्रति प्रतिश्रुत होते हैं। उनका कविकर्म सामाजिक प्रतिबद्धता के रूप में फलीभूत होता है।

साहित्य भावाकुल मन का प्रलाप नहीं है, इसका उद्देश्य बहुत ही व्यापक है। संवेदनाओं से आपूरित साहित्य को सुव्यवस्थित, सुसंस्कारित एवं निर्दोष प्रस्तुति के लिए आचार्यों ने काव्यशास्त्र का निर्माण किया है। साहित्य को मर्यादित करने में प्रस्तुति काव्यशास्त्र की सकारात्मक भूमिका होती है। केवल भावनाओं के अतिरेक को वाणी दे देना ही साहित्य-स्रष्टा का गुण-धर्म नहीं है। साहित्य की कुछ अपनी भी परिसीमा होती है। इसे काव्यशास्त्र के नियमों के सापेक्ष प्रस्तुत करना ही श्रेयस्कर होता है। इस ग्रन्थ में काव्यशास्त्र के मुख्य-मुख्य नियमों एवं विद्यार्थियों के लिए विहित काव्यांगों की विवेचना की गयी है।

तृतीय खण्ड के अन्तर्गत भाषा के स्वरूप का उद्घाटन किया गया है। व्यवस्थित भाषा से ही अभिव्यक्ति अपनी पूर्णता प्राप्त करती है। भाषा का यह परिष्कृत रूप, जो सम्प्रति व्यवहृत हो रहा है, इसका एक लम्बा इतिहास है। सदियों की विकास-यात्रा के बाद भाषा परिनिष्ठित हुई होगी। इसकी शब्द-सम्पदा का यह स्वरूप सहसा नहीं बना होगा। हिन्दी की समृद्धि का मूलाधार इसकी औदार्य प्रकृति है। हिन्दी की प्रतिष्ठा उसकी विभाषाओं एवं बोलियों की देन है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होती हुई आज हिन्दी इस रूप में व्यवहृत हो रही है। इसका दिग्दर्शन कराने का विनम्र प्रयास किया गया है।

मुख्यत: यह पुस्तक विद्यार्थियों की हित-भावना को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। अन्य यशस्वी लेखकों की पुस्तकों में इतना विस्तृत विवेचन कर दिया गया है कि ये पुस्तकें सामान्य विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य नहीं सिद्ध हो रही हैं। विद्यार्थियों के लिए सामान्य परिचय ही उनके आग्रह के अनुरूप है। इस दृष्टि से यह कृति निश्चय ही उपयोगी होगी।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय संचेतना

डॉ० वेदप्रकाश उपाध्याय

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 156

सजि. : रु० 250.00 **ISBN : 978-81-89498-73-3**

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्य-प्रतिभा सर्वातिशायिनी थी। साहित्य के धरातल पर उनकी काव्य-चेतना का प्रस्फुटन प्राय: दो धाराओं के रूप में हुआ— शृंगार एवं वीर रस। शृंगारिकता उनके अन्तस में पूर्व से ही विद्यमान थी, जबकि राष्ट्रीयता ने उन्हें वाह्य रूप से प्रभावित किया। इस अर्थ में कहा जा सकता है कि शृंगारिक भावना उनके आकुल मन की सहज अभिव्यक्ति थी। इसके सापेक्ष उनके छन्दों में वर्णित दर्प, शौर्य एवं वीरता का भाव तत्कालीन परिस्थितियों की देन रही है। परतन्त्रता की पीड़ा से मुक्ति हेतु संघर्षरत असंख्य राष्ट्रभक्तों की भावना को वह अनदेखा कैसे कर सकते थे? राष्ट्रप्रेम की प्रबल जिजीविषा उनके हृदय को झकझोरती रही। वीरता के छन्द उनकी इन्हीं भावनाओं की परिणति सिद्ध हुए। वे इस सत्य को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते कि आत्मा उनकी 'रसवन्ती' एवं 'उर्वशी' में रची-बसी थी। स्वाभिमान के गीत कविधर्म की पूर्ति में गाये गये। युग-स्रष्टा होने के नाते अपने युग के आग्रह को वे कैसे ठुकरा सकते थे। तत्कालीन जनमानस उनसे वीर रस के गीत सुनने का निवेदन करता था। सच है, उनकी साहित्यिक पहचान एवं कीर्ति के आधार उनके राष्ट्रप्रेमपरक गीत ही हैं। इन्हीं गीतों ने उन्हें राष्ट्रकवि के रूप में विभूषित किया।

समग्रत: दिनकर जी सामाजिक प्रतिबद्धता से युक्त, मानवता के प्रति प्रतिश्रुत एवं विराट चेतना सम्पन्न महाकवि थे। उनकी रचनाओं में उनका अपराजित व्यक्तित्व ही प्रतिफलित हुआ है। उनकी लेखकीय ईमानदारी ही उनके साहित्य-सृजन की पहली शर्त रही है। मूलत: दिनकर जी राष्ट्रीय अस्मिता के स्वस्तिवाचक कवि थे। काल के गतिशील धरातल पर उनकी रचनाएँ सदा कालजयी बनी रहेंगी, यह मेरा आत्मिक विश्वास है। —लेखक

समकालीन कविता की समझ

डॉ० सविता श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 196

सजि. : रु० 350.00 **ISBN : 978-81-89498-75-7**

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

समकालीन कविता की, संवेदना और भाषा दोनों स्तरों पर हिन्दी कविता-यात्रा में एक अलग-सी पहचान बनती है। वह अपने समय को पढ़ती है, उसका पाठ प्रस्तुत करती है, उसे रचती है, सामने लाती है और उसका सामना भी करती है। आमतौर पर कविता को समझने के लिए समय का इस्तेमाल पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता है, लेकिन समकालीन हिन्दी कविता यह भी सम्भव करती है कि समय को उसके माध्यम से पढ़ा जा सके। वह कवि-कर्म के निरन्तर कठिनतर होते जा रहे दायित्वों के निर्वाह के लिए प्रयत्नशील है। इस दौर के कई कवियों को सभ्यता-समीक्षा के कवि के रूप में रेखांकित किया गया है। उसके पास बड़े-बड़े दावे नहीं हैं, भाषा के भदेस से अपनी तरफ आकर्षित करने की प्रवृत्ति नहीं है, मतवादी दुराग्रह नहीं है; भाव और विचार, वस्तु और शिल्प में से किसी एक की तरफदारी में दूसरे को सर्वथा तज देने की प्रवृत्ति नहीं है। समकालीन कविता में प्रश्न उठाने, बचा लिए जाने लायक को बचा लेने, स्त्री की, दलित की तरफदारी के बजाय उनकी तरफ से सोचने के साथ ही घर-परिवार और रिश्ते-नातों के रूप में भारतीयता को पहचानने और व्यक्त करने के इरादों को पढ़ा जा सकता है। अपने समय की चुनौतियों को बूझने और जूझने के वह अपने तौर-तरीके ईजाद करती रही है।...

....और इस किताब 'समकालीन कविता की समझ' के बारे में सिर्फ यही कि 'समझ' उन जरूरी जरूरतों में से एक है जिनके बिना समकालीन कविता का आस्वाद मुश्किल है।....

निबन्ध एवं कहानियाँ

डॉ० राकेश कुमार द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 120

अजि. : रु० 60.00 **ISBN : 978-93-5146-062-6**

अत्र-तत्र-सर्वत्र

99 साल तक
'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' गलत छपती रही

मेलबर्न। एक ऑस्ट्रेलियाई विज्ञानी ने दुनियाभर में मशहूर 'ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' की ऐसी गलती पकड़ी है जो पिछले 99 सालों में किसी ने नहीं पकड़ी। इसी वजह से अब 'ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' को साइफन की परिभाषा बदलनी पड़ी।

शोधकर्ताओं के अनुसार, अंग्रेजी की 'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' में लगभग एक शताब्दी तक गलत जानकारी दी जाती रही कि एक साइफन के पीछे गुरुत्वाकर्षण नहीं हवा का दबाव काम करता है। वर्ष 2010 में 'क्वीन्सलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी' के डॉ० स्टीफन ह्यूजेस ने इस गलती को पकड़ा। डॉ० स्टीफन ह्यूजेस के अनुसार, उनके द्वारा गलती पकड़े जाने पर 'ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' ने उसमें सुधार किया है लेकिन फिर भी नई परिभाषा पूरी तरह स्पष्ट नहीं है।

ब्रिटिश वि०वि० से भारतीय छात्रों की दूरी

ब्रिटेन सरकार के कड़े वीजा कानूनों का दुष्प्रभाव सामने दिखने लगा है। अप्रवासियों की संख्या कम करने के लिए बनाये गये नये नियम भारतीय छात्रों को रास नहीं आए और ब्रिटिश विश्वविद्यालयों से उन्होंने दूरी बना ली है। यहाँ पढ़ने आने वाले एशियाई छात्रों की संख्या तीन साल से लगातार गिर रही है।

हिन्दी की मिठास

भारत से रिश्तों में हालिया विवादों की कड़वाहट पाटने को बेचैन अमेरिका अब हिन्दी की मिठास का भी सहारा ले रहा है। अमेरिका ने भारत में अपने दूतावास की वेबसाइट को हिन्दी में भी लांच किया है। दूतावास की मासिक पत्रिका स्पैन का भी हिन्दी पोर्टल शुरू किया है साथ ही अमेरिकी दूतावास वेबसाइट को उर्दू में भी उपलब्ध कराने की तैयारी कर रहा है।

विश्व पुस्तक राजधानी हेतु व्रोकला नामित

पोलैंड के शहर व्रोकला को 2016 के लिए वर्ल्ड बुक कैपिटल नामित किया गया है। यूनेस्को की महानिदेशक इरीना बोकोवा ने कहा कि व्रोकला के नेताओं ने एक उत्कृष्ट कार्यक्रम विकसित किया है जो पूरे सालभर लोगों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा। पश्चिमी पोलैण्ड के सबसे बड़े शहर व्रोकला को क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन, किताब उद्योग और पुस्तकालयों को बढ़ावा देने के लिहाज से चुना गया है।

स्मृति शेष

वेद विद्वान प्रो० ब्रज बिहारी चौबे का निधन

40 से अधिक ग्रन्थों का लेखन व सम्पादन करने वाले राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित 1 जुलाई, 1940 को बलिया के जवहीं गाँव में जन्मे वेद विद्वान प्रो० ब्रजबिहारी चौबे का विगत 10 मई को निधन हो गया। वे राष्ट्रपति पुरस्कार सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुए थे। पंजाब सरकार ने उन्हें शिरोमणि संस्कृत साहित्यकार पुरस्कार से सम्मानित किया था।

शरद नागर का देहावसान

लखनऊ। प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतलाल नागर के संग्रह को एकत्र करने वाले उनके पुत्र शरद नागर की मृत्यु विगत 14 मई को हो गई। वे 76 वर्ष के थे। शुरुआती दौर में शरद नागर का नाम भले ही पिता अमृतलाल नागर से जाना गया लेकिन बाद में अपने अद्वितीय योगदान से उन्होंने रंगमंच की काफी स्थिति सुधारी। स्व० शरद नागर ने वर्ष 1976 में संगीत नाटक अकादमी में बतौर सहायक सचिव पद सँभाला। वहीं से सफर शुरू किया रंगमंच को और बेहतर बनाने का। आप कितनी ही योजनाओं का संचालन कर अक्टूबर 1997 में सेवानिवृत्त हो गए।

प्रसिद्ध रंगकर्मी हेमंत मिश्र नहीं रहे

साहित्यकार रामदरश मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र 61 वर्षीय बहु-प्रतिभाशाली अभिनेता हेमंत मिश्र का 11 जून की शाम को अपने निवास पर निधन हो गया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक रहे हेमंत जी ने अनेक धारावाहिकों और फिल्मों में काम कर अपने अभिनय की छाप छोड़ी। इनमें प्रमुख हैं—हम लोग, मैला आँचल, आषाढ़ का एक दिन, मुल्ला नसीरुद्दीन, और भी गम हैं जमाने में, बैंडिट क्वीन, एक रुका हुआ फैसला, गुलाबड़ी, मेसी साहब, बैण्ड बाजा बारात आदि। इसके अतिरिक्त राजा जी का राज, ए रेस्पेक्टेबल वेडिंग, दूसरा, शरद, सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट, सबसे बड़ा सवाल आदि नाटकों और सुपर सिक्स, सौ बातों की एक बात, तुनतुनिया, छत्ती, लड़ाई, ज्योति आदि टीवी धारावाहिकों की पटकथा लिखी। हाल ही में इनके द्वारा अनुदित बर्तोल्त ब्रेख्त के चर्चित नाटक 'ए रेस्पेक्टेबल वेडिंग' पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।

गायकी का सितारा मौन

बनारस घराने की पुरानी गायकी और ख्याल गायकी के दूसरे सितारे पं० पशुपतिनाथ मिश्र विगत 30 मार्च को सदा के लिए मौन हो गए। दो वर्ष पहले इनके बड़े भाई पं० अमरनाथ मिश्र का भी निधन हो गया था। गायकी की विधा और और घराने में दोनों भाइयों को मिश्र बन्धु के नाम से जाना जाता था।

नहीं रहे उपन्यासकार मारक्वेज

नोबेल पुरस्कार विजेता और कोलम्बिया के मशहूर उपन्यासकार गार्सिया मारक्वेज का 87 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उन्हें 1982 में साहित्य के लिए नोबल मिला था। उन्होंने 1967 में उपन्यास 'वन हंड्रेड ईयर ऑफ सॉलीट्यूड' की रचना की थी जिसकी 25 भाषाओं में पाँच करोड़ से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। उनकी कहानियाँ साहित्य के क्षेत्र में खासतौर से जादुई यथार्थवाद के तौर पर जानी जाती हैं।

शिवकुमार गोयल का निधन

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार शिवकुमार गोयल का विगत 29 अप्रैल को निधन हो गया। वह 76 वर्ष के थे। गोयल को गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता समेत कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने लम्बे समय तक संसद की रिपोर्टिंग की। गोयल ने 50 से अधिक किताबें लिखीं। भारत-चीन युद्ध पर लिखी गयी उनकी किताब 'हिमालय के प्रहरी' के लिए उन्हें राष्ट्रपति ने सम्मानित किया।

जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का देहावसान

'मुर्दाघर' जैसे चर्चित उपन्यास के लेखक 77 वर्षीय जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का विगत दिनों जर्मनी में निधन हो गया। उनके उपन्यासों में 'कटा हुआ आसमान', 'इतिवृत्त' और 'अकाल' शामिल हैं। इसके अलावा उनकी 'शुरुआत और अन्य कहानियाँ' और अंग्रेजी की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हैं। उन्होंने फिल्मों के लिए लेखन के अलावा कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया था।

ज्योत्स्ना मिलन का निधन

कथाकार-कवयित्री ज्योत्स्ना मिलन का विगत दिनों भोपाल में निधन हो गया। वे 73 साल की थीं। 'अ अस्तु का' और 'केशर माँ' ज्योत्स्ना मिलन के प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनके कई कविता तथा कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। मुम्बई में 1941 में जन्मी ज्योत्स्ना मिलन ने गुजराती से हिन्दी में अनेक अनुवाद किए। वे स्त्री संगठन 'सेवा' की पत्रिका 'अनसूया' की सम्पादक भी थीं। ज्योत्स्ना मिलन हिन्दी के प्रसिद्ध कवि-कथाकार रमेशचंद्र शाह की पत्नी थीं।

आलोचक यशवंत चित्ताल का निधन

कन्नड़ साहित्य के बहुत बड़े कथाकार और आलोचक यशवंत चित्ताल का देहावसान विगत 22 मार्च को हो गया। वे 86 वर्ष के थे। इनके पाँच उपन्यास, बारह कथा संकलन, तीन आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित हैं। इनकी मातृभाषा कोंकणी है किन्तु लिखा है कन्नड़ में। राज्य एवं केन्द्र साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

संगीत नाटिकायें : अभिनव भरत आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, प्रकाशन : अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी, उत्तर बेनियाबाग, वाराणसी-221001, तृतीय संस्करण 2014, मूल्य : 100/- रु० मात्र।

×× देश-काल का अतिक्रमण करती हुई रचनाएँ ही भाषा और साहित्य की अमूल्य धरोहर होती हैं। उन्हीं में से कुछेक नाट्य-रचनाओं का संकलन है प्रस्तुत संग्रह। पुण्यश्लोक आचार्य सीताराम चतुर्वेदी का शैक्षणिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध से उत्तरार्द्ध तक में सुविस्तृत रहा है। विद्वान-मनीषी होने के साथ-साथ वे नाट्यविद्, नाट्य लेखक और नाट्य-प्रयोक्ता-निर्देशक एवं अभिनेता भी थे। अत: उनके पार्थिव कलेवर द्वारा किये गये नाट्य-प्रयोगों की सुविचारित अन्तरानुभूति से उद्भूत हैं ये अपार्थिव नाट्य रचनाएँ। प्रस्तुत संकलन के अन्तर्गत आचार्यजी की तीन नाट्य-कृतियों का समावेश है जिनकी रचना सहज, संप्रेष्य काव्य-भाषा में की गयी है। लय-ताल निबद्ध गीति-छन्द रचनाकार के संगीत-ज्ञान का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यहाँ प्रस्तुत नाटिकाएँ (1) भगवान बुद्ध (ऑपेरा शैली), (2) अलका (चंपू नाट्य काव्य), (3) मदन दहन (नृत्य नाट्य) विभिन्न नाट्य शैलियों की रचनाएँ हैं। आचार्यजी द्वारा प्रणीत प्रयोग-परक सर्जना की समीक्षा हमारे इस स्तम्भ की सीमा में सम्भव नहीं अत: प्राप्ति स्वीकार के साथ इत्यलम्।

साक्षात्कार : (फरवरी-मार्च-मई 2014, 3 अंक) सम्पादक : प्रो० त्रिभुवननाथ शुक्ल, साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद, संस्कृति भवन, बाणगंगा, भोपाल-3

अक्षरा : (मार्च-अप्रैल/मई-जून 2014, 2 अंक) सम्पादक : डॉ० सुनीता खत्री, मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन श्यामला हिल्स, भोपाल-462002

अक्षर पर्व : (मई-जून 2014, दो अंक) सम्पादक : सर्व मित्रा सुरजन, देशबन्धु कार्यालय, 506, आई०एन०एस० बिल्डिंग, 1, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

समीक्षा : (जनवरी-मार्च 2014) सम्पादक : सत्यकाम, प्रबन्ध सम्पादक, समीक्षा, 33020-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

कला समय : (फरवरी-मार्च 2014) सम्पादक : विनय उपाध्याय, एम-एक्स-135, ई-7, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016

जज्बा-ए-क़िताबात

ई-बुक्स की सदी में मध्यकाल की तरह पढ़ने की ललक और किताबों के प्रति गहरे लगाव की खबर पढ़कर आश्चर्य हुआ। राष्ट्रीय-साक्षरता के स्तर पर सबसे अव्वल केरल राज्य के घने जंगल में मौजूद है दुनिया का यह ऐकान्तिक पुस्तकालय जिसके संचालक हैं चाय-विक्रेता 73 वर्षीय चिन्नाथांबी। झोंपड़ीनुमा आवास और चाय की दुकान के बाहर हाथ से लिखकर टाँग दिया गया है 'अक्षर आर्ट्स और स्पोर्ट्स लाइब्रेरी, इरुप्प कल्लाकुडी इगमलाकुडी'। यह जगह केरल के जंगलों में सबसे दूर-दराज की पंचायत है। यहाँ आदिवासी मुआवान समूह के 25 परिवार रहते हैं। यहाँ तक पहुँचने के लिये मुन्नार के नजदीक पेट्टिमुडी से 18 किलोमीटर पैदल चलकर जाना होगा और लाइब्रेरी तक पहुँचने के लिये तो और भी फासला तय करना होगा। चाय की दूकान के भीतर झोंपड़ी में बुक-शेल्फ की जगह जूट के थैलों में मौजूद है मलयालम भाषा का 'क्लासिक' साहित्य, इनमें अनुवाद भी हैं। करीब 160 किताबों की इस लाइब्रेरी में किताबों के इशू किये जाने और उनकी वापसी का लेखा-जोखा भी एक रजिस्टर में मौजूद है। घने जंगल में बसे एक आदिवासी समुदाय के गरीब गाँव की अमीर-सोच के वैभव और पी०वी० चिन्नाथांबी के जज्बे को हमारा सलाम।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 15 अंक : 5-6

मई-जून 2014

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14
RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 • Mobile : (0) 9198701115
E-mail : **sales@vvpbooks.com ▪ vvpbooks@gmail.com**
Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

पो०बॉक्स 1149, विशालाक्षी भवन (भूगर्भ तल),
चौक (चौक पुलिस स्टेशन से संलग्न)
वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

P.O. Box : 1149, Vishalakshi Building (Basement),
Chowk (Adjacent to Chowk Police Station),
VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)